गाँधी

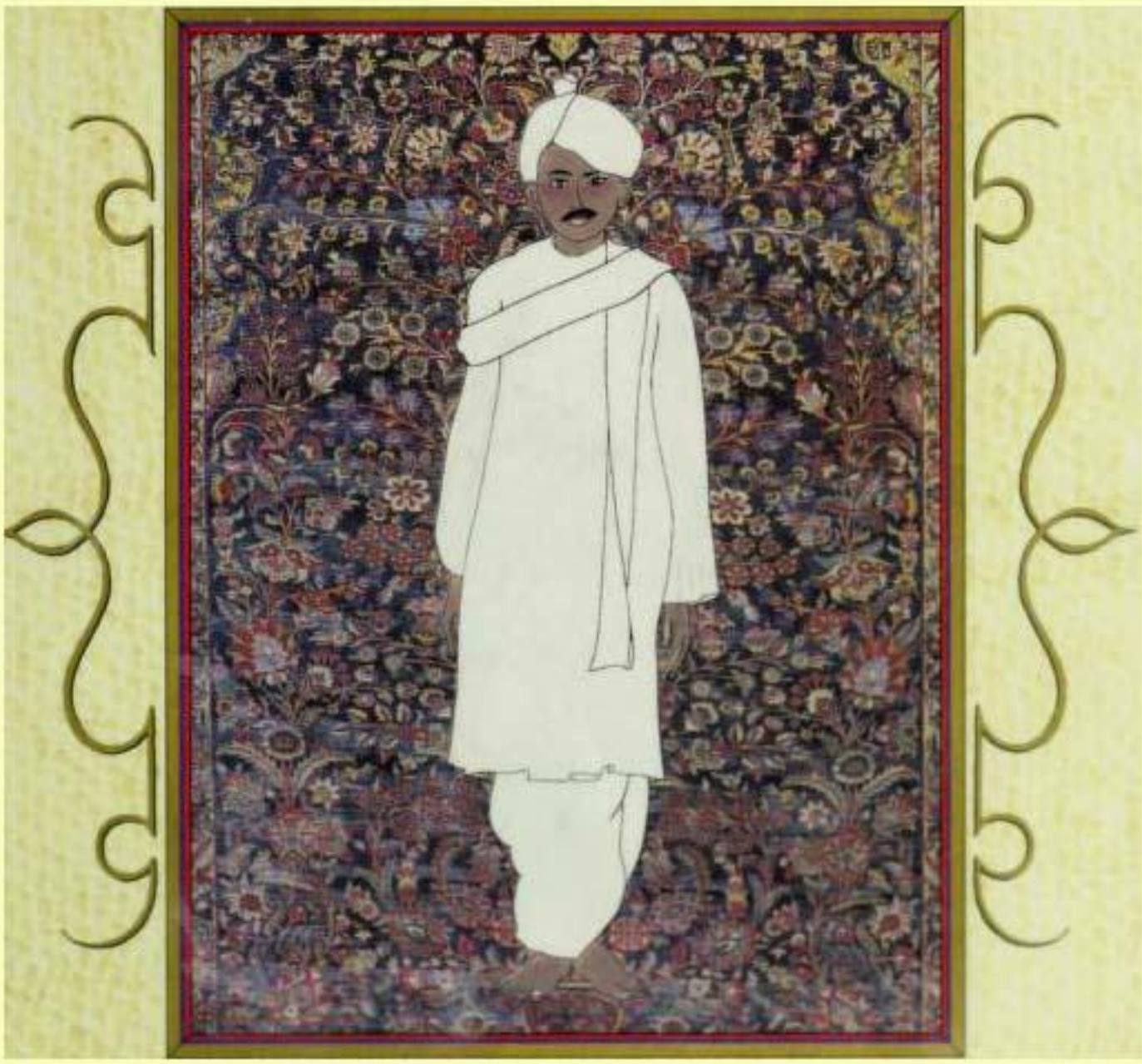

डम्मी, हिंदी : विदूषक

मोहनदास करमचंद गाँधी – को उनके अनुयाई महात्मा (महान-आत्मा) के नाम से संबोधित करते थे. उनका जन्म भारत में, 1869 में हुआ. बाद में वे दुनिया के सबसे प्रभावशाली और आदरणीय राजनैतिक और सामाजिक नेता बने.

गाँधी एक कट्टर आदर्शवादी और हिम्मतवाले विचारक थे. उन्होंने खुद को आम लोगों के संघर्षों के साथ जोड़ा. अंत में वो सबसे कमज़ोर और शोषित लोगों की आवाज़ बने. उनका इस कथन में गहरा विश्वास था "घृणा को सिर्फ प्रेम से ही जीता जा सकता है." वो सामाजिक और राजनैतिक बदलाव को अहिंसक तरीकों से लाने के हिमायती थे. वो भारत की जाति व्यवस्था में कुछ बदलाव लाने में, और भारत को इंग्लैंड से आज़ादी दिलवाने में सफल हुए.

गाँधी के जीवन ने विश्व के कई प्रगतिशील नेताओं को प्रेरित किया. उनमें अमरीका में नागरिक अधिकारों की अहिंसक लड़ाई लड़ने वाले **मार्टिन लूथर किंग**, साउथ-अफ्रीका में अश्वेतों आन्दोलन के नेता **नेल्सन मंडेला** शामिल थे. पूरी दुनिया में जहाँ भी अहिंसक आन्दोलन हुए हैं वहां पर लोग गाँधी से प्रेरित और प्रभावित हुए हैं.

सुन्दर शब्दों और चित्रों में यहाँ **डम्मी** ने गाँधी के विचारों को सरलता और सच्चाई से उतारा है. डम्मी के लिए यह अहिंसा के महान दूत को एक श्रद्धांजलि है.

गाँधी की दुनिया
(1869-1948)
ग्रेट ब्रिटेन
GREAT BRITAIN
London
लन्दन
पाकिस्तान
PAKISTAN
Allahabad
New Delhi
Amritsar
भारत
Porbandar
Dandi
INDIA
PAKISTAN
Gandhi's World
1869-1948
दक्षिणी
अफ्रीका
SOUTH AFRICA
केप टाउन
Cape Town
Durban
डरबन

“वही विवेकशील है जो सब में खुद को देखता है और खुद में सबको देखता है. भगवान के प्रति प्रेम ने उसकी सभी स्वार्थी इच्छाओं और वासनाओं को निगल लिया है.”

– भागवद गीता

गाँधी

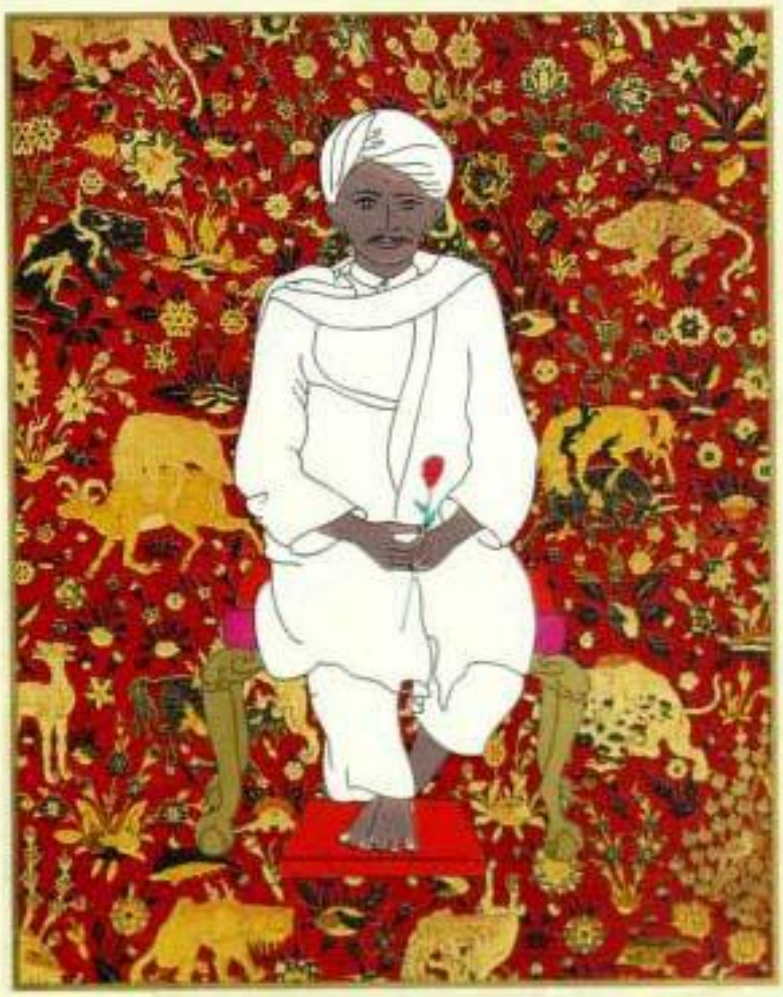

डम्मी, हिंदी : विदूषक

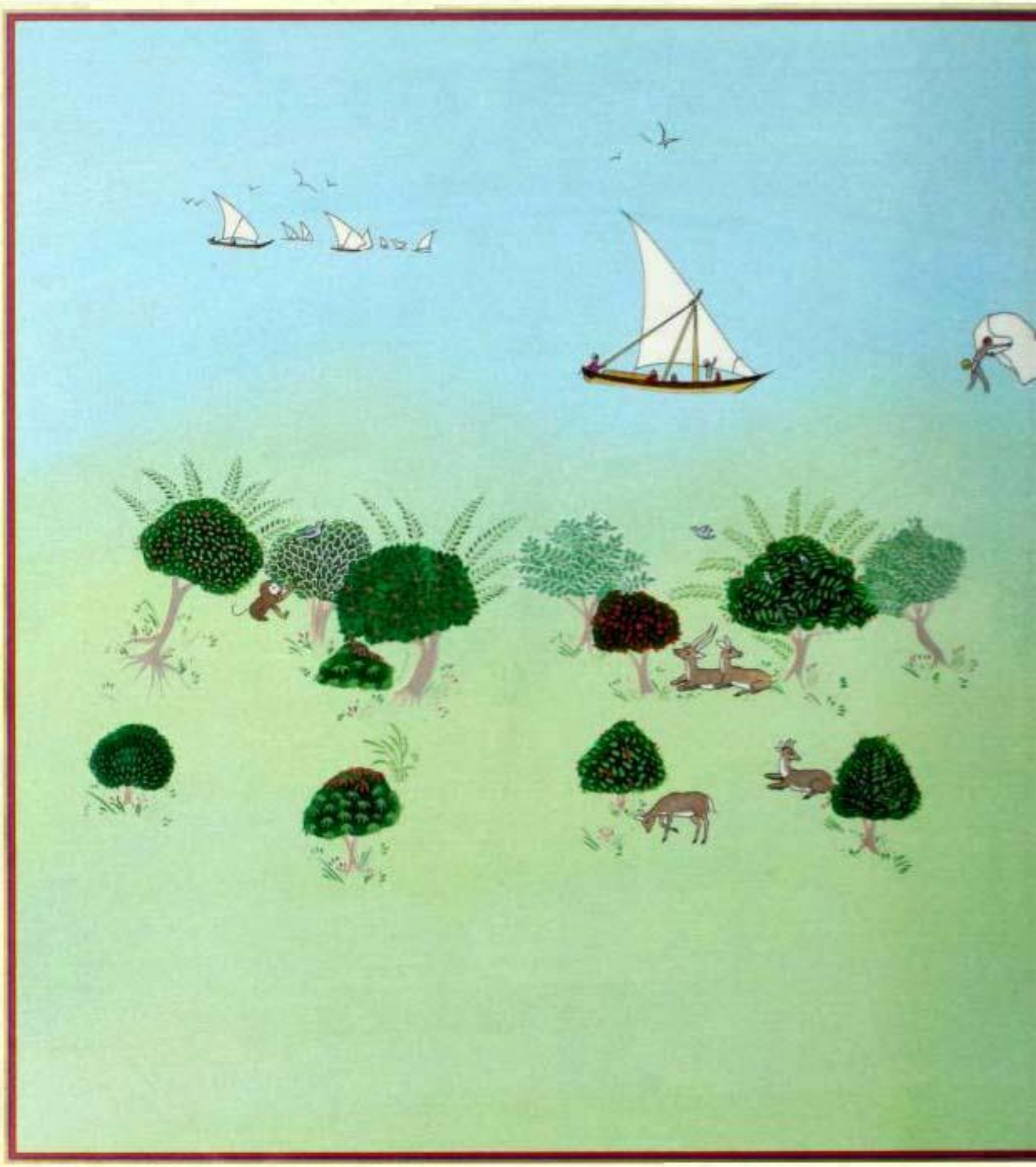

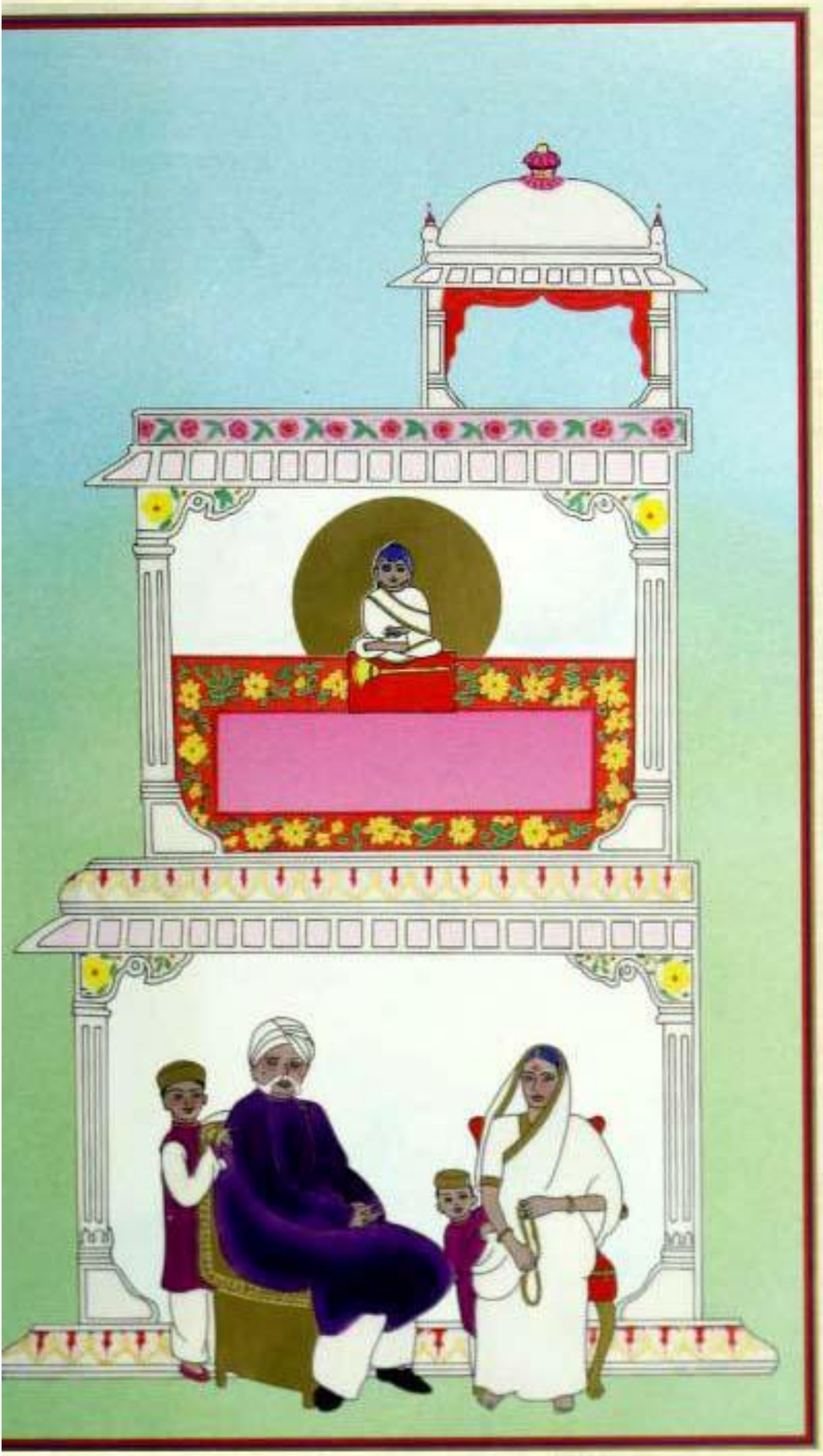

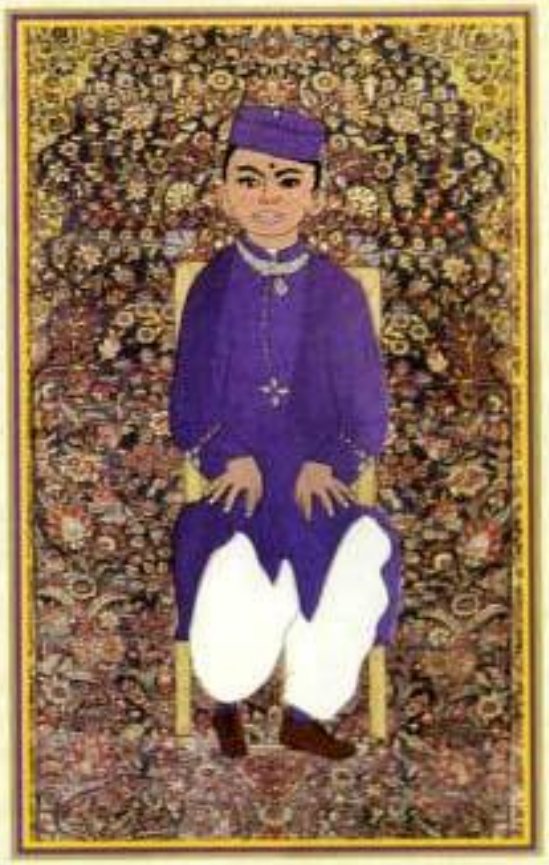

मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म पोरबंदर, भारत में 2 अक्टूबर 1869 को हुआ. उनके पिता एक राजा के दरबार में प्रधानमंत्री थे. उनकी माँ बहुत धार्मिक थीं. माँ ने अपने बच्चों को जैन धर्म की दीक्षा दी. गाँधी में बचपन से ही धर्म के गहरे संस्कार पड़े – आत्मा की शुद्धि के लिए प्रार्थना करो, इमानदार बनो, न्यूनतम चीज़ों से काम चलाओ और कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाओ.

जब गाँधी सिर्फ 13 बरस के थे तो जैन परंपरा के अनुसार उनका विवाह हो गया. उनकी पत्नी थीं कस्तूरबाई मकानजी. वो भी 13 साल की थीं और देखने में बहुत सुन्दर थीं. वो बहुत धैर्य और हिम्मत वाली थीं.

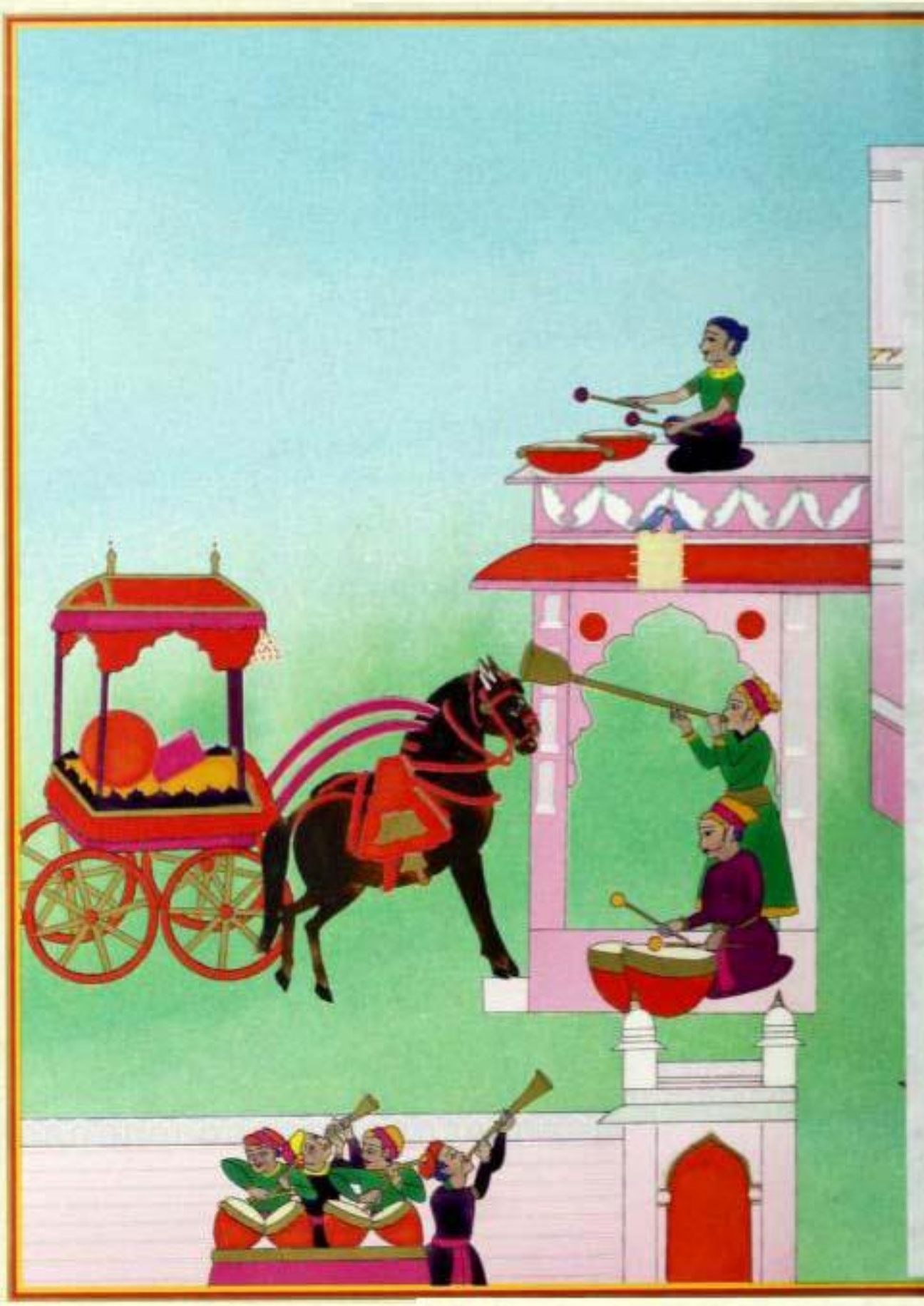

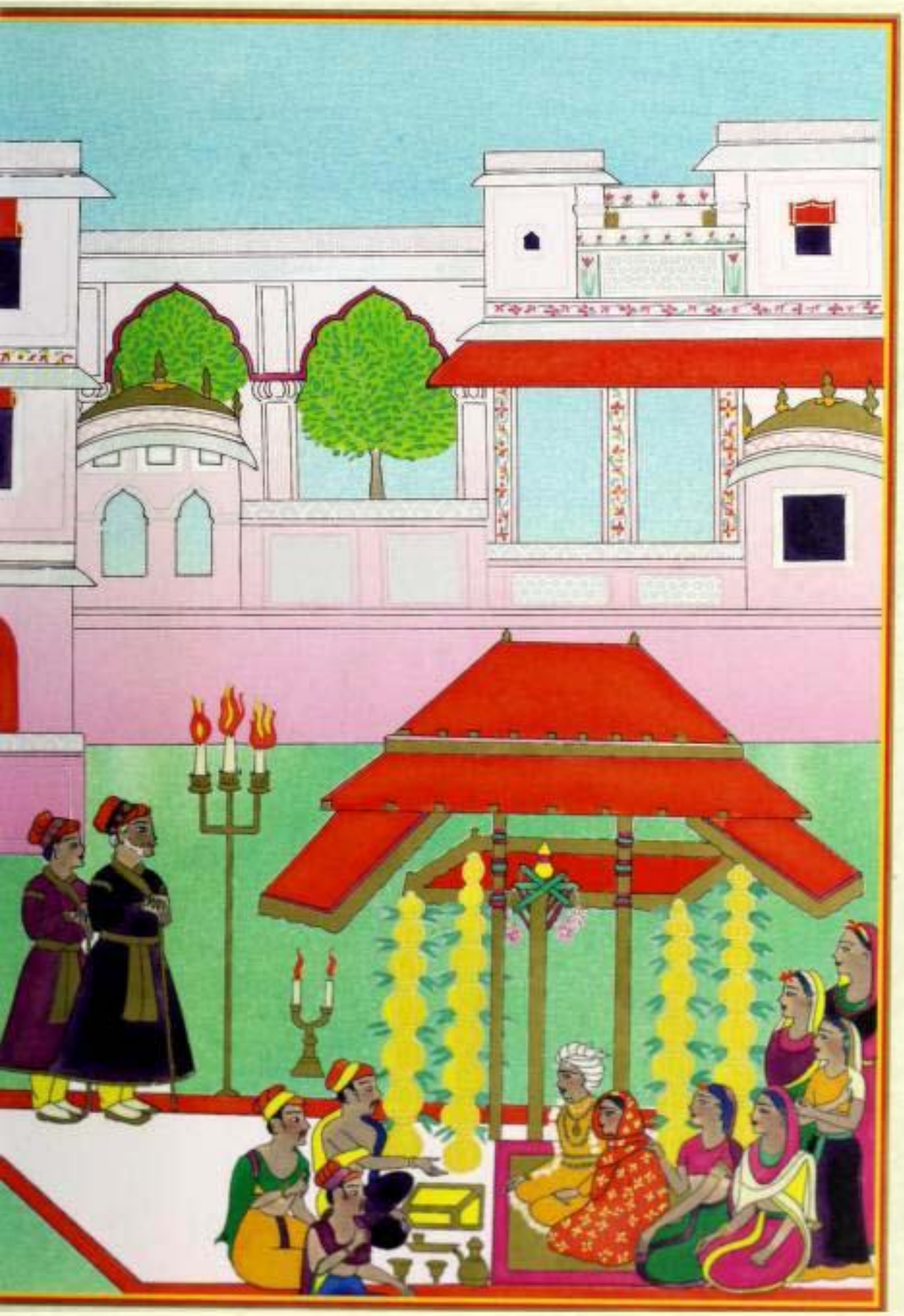

बचपन में गाँधी बड़े शर्मीले और डरपोक थे. उन्हें भूत, सांप और अँधेरे से बहुत भय लगता था. गाँधी लाइट जलाकर ही सोते थे, अँधेरे में उन्हें नींद नहीं आती थीं. अपनी पति का यह हाल देखकर कस्तूरबा को हंसी आती थी.

गाँधी खुद को अन्य लोगों से अलग महसूस करते थे. वो पढ़ाई में कमज़ोर थे. बड़ी मुश्किल तमाम उन्होंने हाई-स्कूल पास किया. कॉलेज में कुछ विषयों में वो फेल भी हुए. 1888 में, चाचा की सलाह पर गाँधी, अपने घर और परिवार को छोड़कर कानून सीखने के लिए लन्दन चले गए. लन्दन में काफी अरसे तक उन्हें बहुत अकेलापन महसूस हुआ. सुरक्षित महसूस करने के लिए गाँधी ने खुद को एक अँगरेज़ जेंटलमैन में बदलने की कोशिश की. वो महंगे कपड़े पहनने लगे और बढ़िया घर में रहने लगे. गाँधी ने अच्छी अंग्रेज़ी बोलना सीखी, वायलिन बजाना सीखा, यहाँ तक कि उन्होंने अंग्रेजी नृत्य फॉक्स-ट्राट भी सीखा.

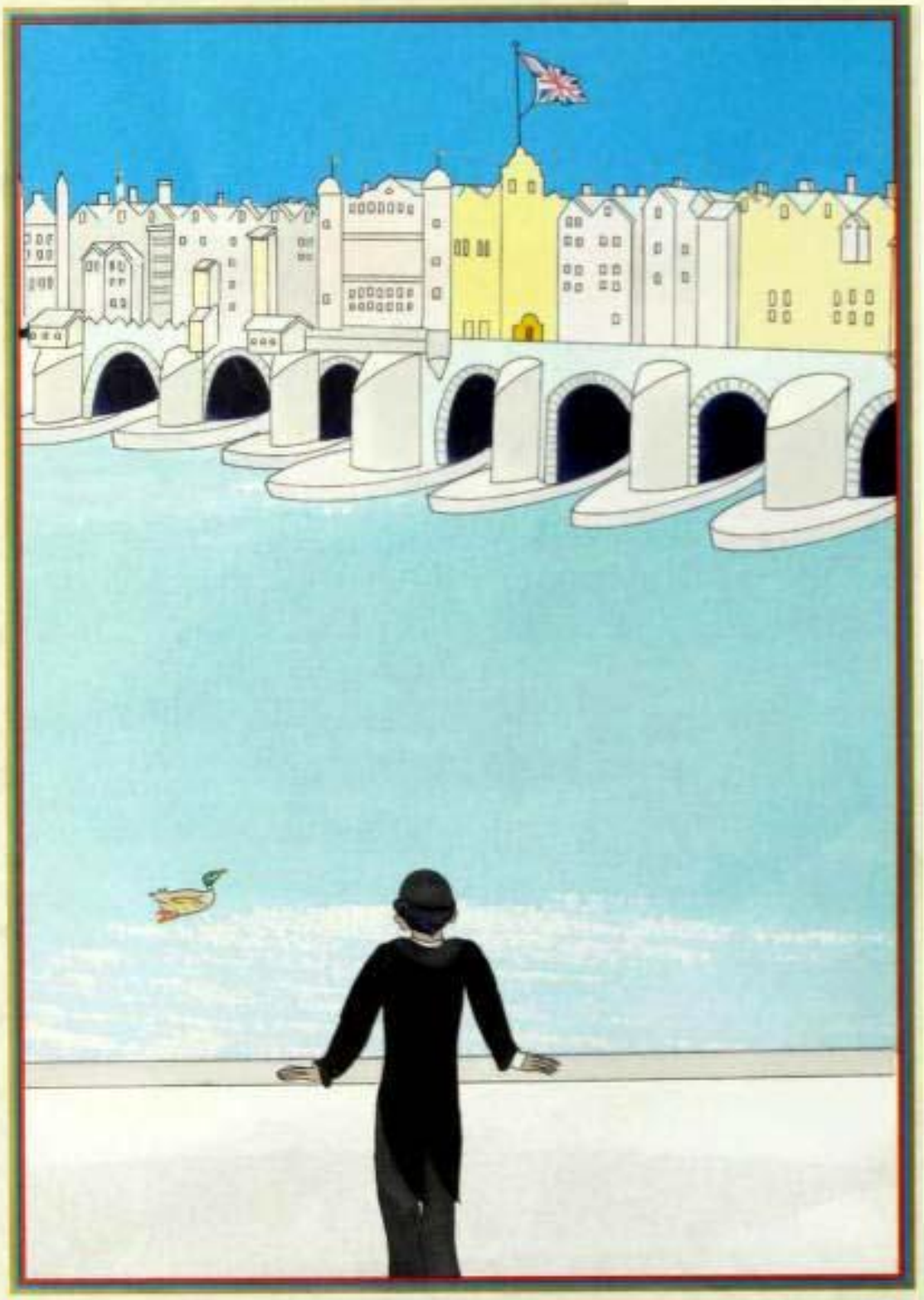

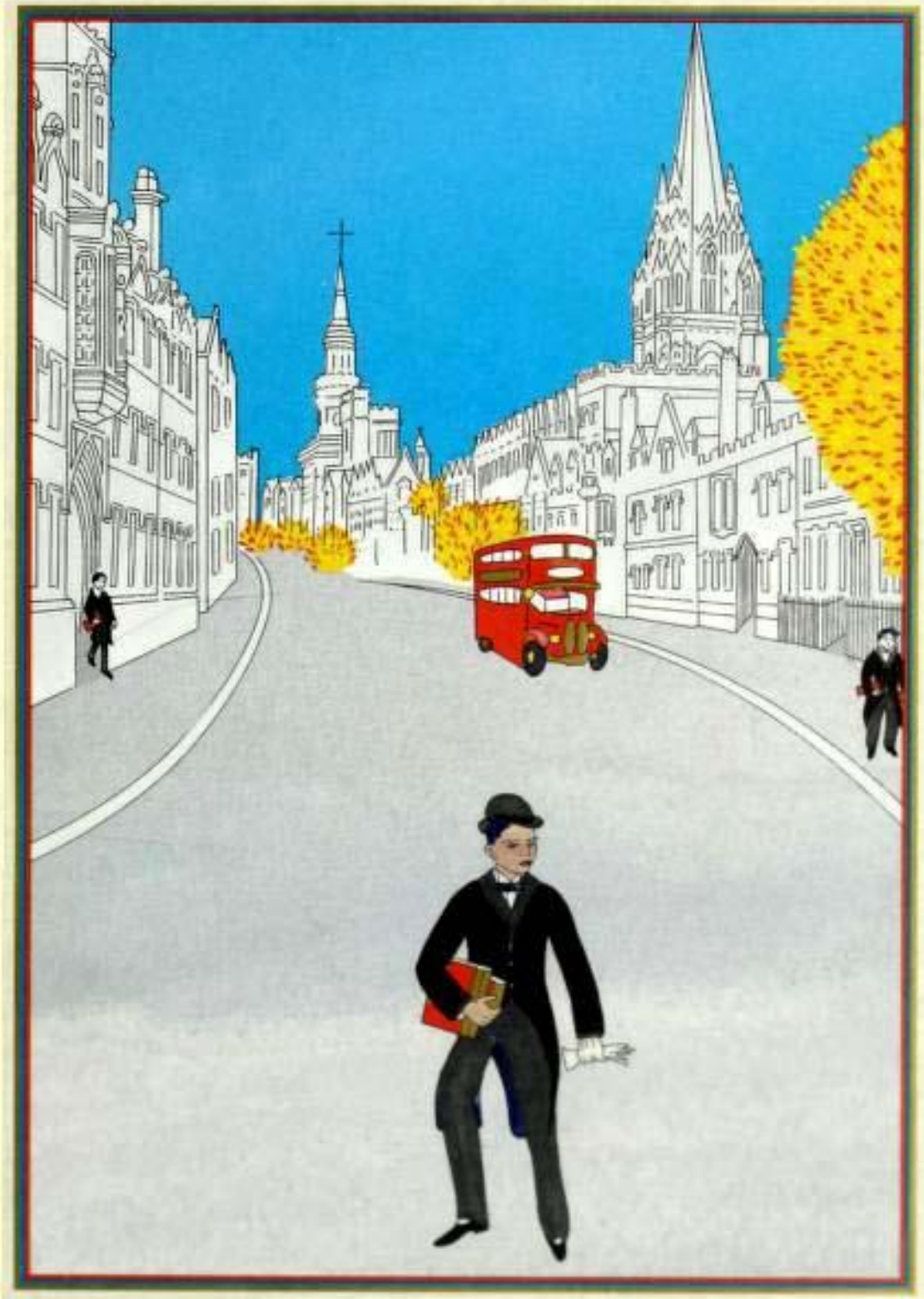

पर उस सबसे गाँधी खुश नहीं हुए. गहरे जैन संस्कारों के कारण गाँधी को अपनी बाहर की ज़िन्दगी और आन्तरिक जीवन के बीच में खाई नज़र आई. उसके बाद से गाँधी ने एक सरल जीवन जीना शुरू किया. उन्होंने कीमती कपड़े और महंगा कमरा छोड़ दिया. अब वो खुद अपना खाना पकाने लगे. बसों में यात्रा करने की बजाए वो अब हर जगह पैदल चलकर जाने लगे. वो लन्दन में शाकाहारी सोसाइटी के सदस्य बने. इस स्वाबलंबन से गाँधी काफी खुश हुए, वैसे वो अभी भी बहुत शर्मीले थे.

लन्दन आने के तीन साल बाद गाँधी ने कानून की परीक्षा पास की. फिर वो जहाज़ द्वारा वापिस भारत लौटे.

घर वापिस पहुँचने पर गाँधी को पता चला कि उनकी माँ का देहांत हो चुका था. जीवन में सफल होने के लिए गाँधी ने बम्बई में वकालत शुरू की. पर वो इतने शर्मीले थे कि कोर्ट-कचेहरी में उनकी जुबान ही नहीं खुली और उसके लिए उन्हें अपमान सहना पड़ा.

तब गाँधी के भाई को दक्षिण-अफ्रीका में एक कानून-कम्पनी का पता चला जिन्हें एक वकील की ज़रुरत थी. फिर 1893 में गाँधी अपनी पत्नी के साथ भारत छोड़कर दक्षिण-अफ्रीका गए. वहां भी गाँधी एक अजनबी देश में एक विदेशी ही थे. वहां पर पहली बार गाँधी ने नस्लवाद का अनुभव किया. गाँधी को अपनी चमड़ी के रंग के कारण गोरे दक्षिण-अफ्रीकियों के ताने और मार सहनी पड़ी. वहां पर कानूनी काम भी काफी कठिन था. गाँधी चाहते तो दक्षिण-अफ्रीका छोड़कर भारत वापिस लौट सकते थे. पर गाँधी ने वहां खुद को बदलने की कोशिश की जिससे वो किसी भी चुनौती का सामना कर सकें.

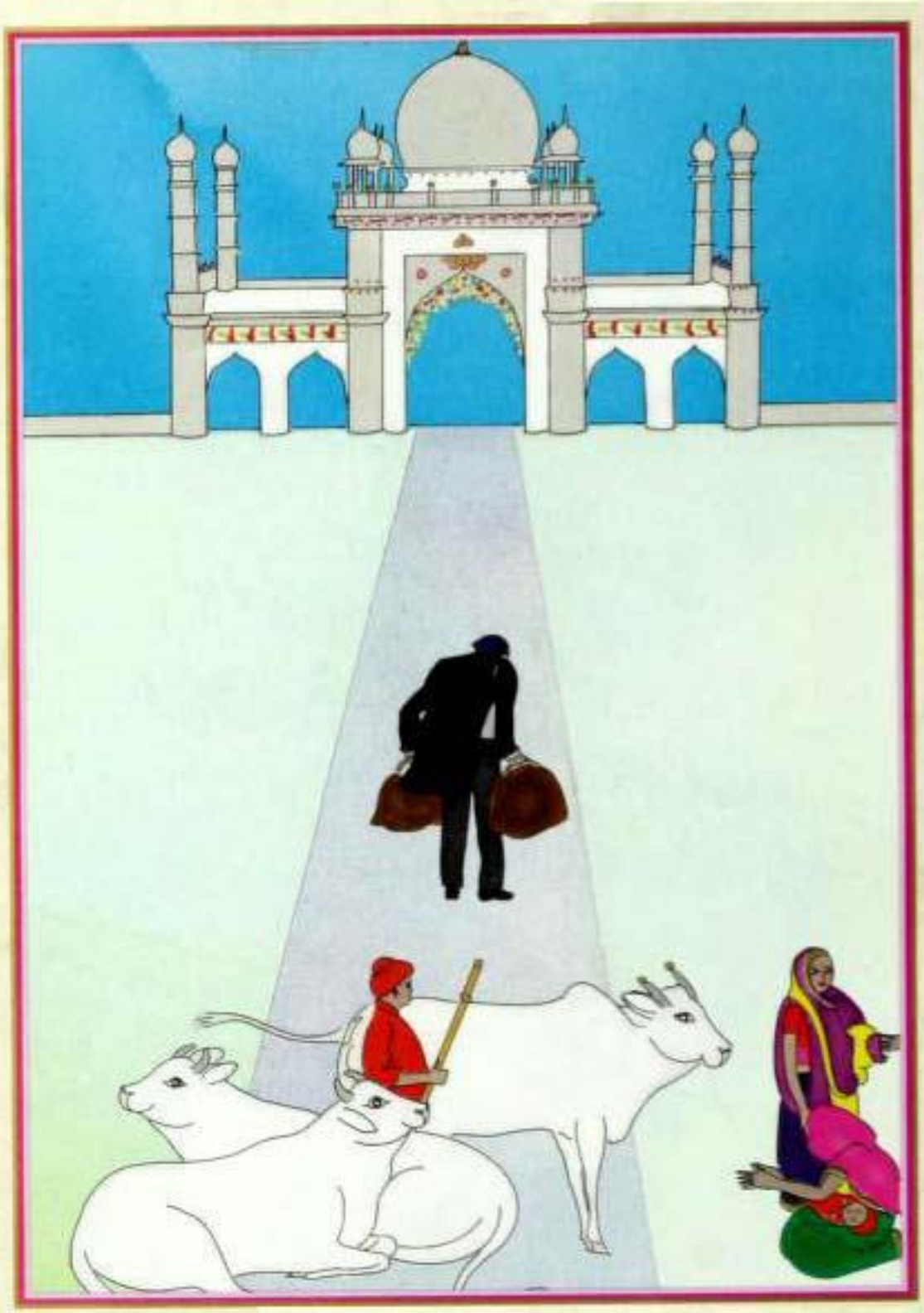

बहुत लगन और ध्यान से गाँधी अपने लक्ष्य को हासिल कर पाए. उनका मानना था कि “कानून का उद्देश्य है मनुष्य की अच्छाइयों को पहचानना और उनके हृदय में अपना स्थान बनाना.”

गाँधी हरेक मुश्किल और परेशानी को, दूसरों की सेवा करने का एक अवसर मानने लगे. यही उनके जीवन की सफलता की कुंजी बनी.

सर्दियों की एक रात गाँधी, ट्रेन के फर्स्ट क्लास के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे. एक गोरे आदमी ने इस पर अपनी आपत्ति जताई और गाँधी को थर्ड-क्लास के डिब्बे में जाने को कहा.

जब गाँधी ने जाने से इंकार किया तो ट्रेन कंडक्टर ने उन्हें डिब्बे में से नीचे धकेल दिया. उस रात सर्दी में ठिठुरते हुए, अँधेरे-वीरान में गाँधी को पहली बार नस्ल की पक्षपातपूर्ण पूर्वधारणाओं की बीमारी समझ में आई.

ट्रेन एक उस दर्दनाक अनुभव के बाद गाँधी ने "अहिंसा" या प्रेम के बल के सिद्धांत को रचा. उन्होंने लिखा, "प्रेम का बल हमेशा हिंसा के बल पर विजयी होगा." वो नस्लवाद की पूर्वधारणाओं की बीमारी को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे. उन्होंने हिंसा के सामने कभी नहीं झुकने, और हिंसा के बदले में हिंसा का उपयोग नहीं करने का प्रण लिया. उन्होंने स्वर्ग की शांति को, पृथ्वी पर लाने का बीड़ा उठाया.

बीसवीं शताब्दी के अंत में दक्षिण-अफ्रीका पर हॉलैंड (डच) का राज्य था. 12 अगस्त 1906 को डच सरकार ने एक काला कानून पास किया जो भारतीय मूल के लोगों को उनके नागरिक अधिकारों से वंचित करता था. उसके खिलाफ गाँधी ने पहला अहिंसक जनांदोलन शुरू किया. सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करने के इस आन्दोलन में, पांच सौ से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया.

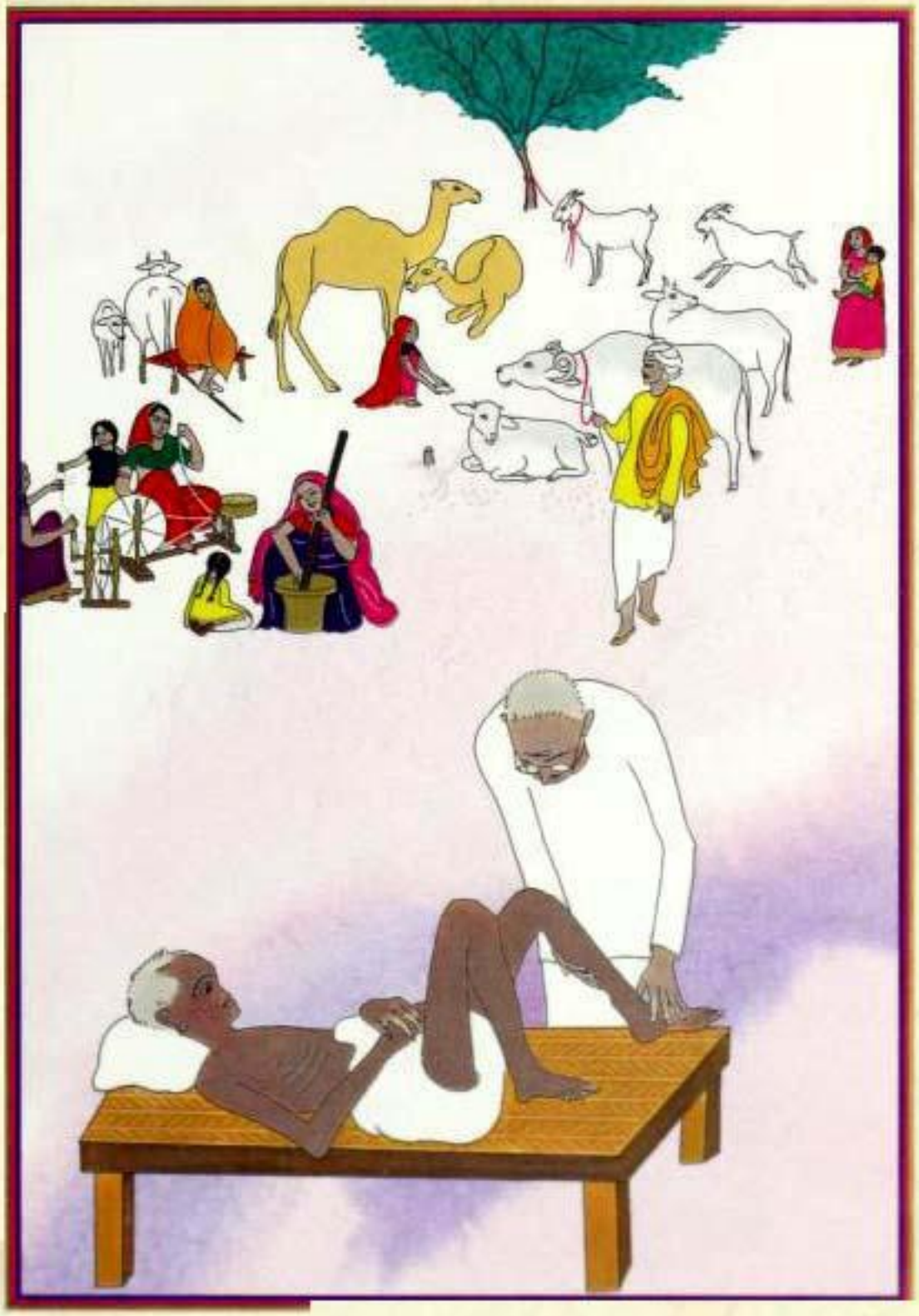

गाँधी और उनके अनुयायी अश्वेत और भारतीय मूल के लोगों के अधिकारों के लिए लड़े. गाँधी ने लोगों को निशुल्क कानूनी सलाह दी और जो लोग बेहद हताश स्थिति में थे उन्हें सहारा दिया. प्लेग के प्रकोप में जिन असहाय लोगों को त्याग दिया गया था गाँधी ने उनकी सेवा की. उन्होंने कोढ़ियों के ज़ख्मों पर मलहम-पट्टी की और मरते समय लोगों को दिलासा दिलाई. “यह लोग मेरे भाई-बहन हैं,” गाँधी ने कहा. “उनका दुःख-दर्द मेरा अपना दुःख-दर्द है. दुनिया के सभी लोग मेरा परिवार हैं.”

गाँधी का भारतीय धर्मग्रंथ गीता की सीखों में, गहरा विश्वास था. गाँधी दिन में कई बार ध्यान-चिंतन करते थे जिससे वो लोगों से प्रेम कर सकें और अपने अन्दर की स्वार्थी भावनाओं का नाश कर सकें. वो क्रोध से दूर रहते थे जिससे उनके निर्णय पर उसका कोई गलत असर न पड़े. प्रेम की ताकत में विश्वास से और पूरी दुनिया को अपना परिवार समझने से गाँधी की शर्म और उनका डर पूरी तरह से रफूचक्कर हो गया.

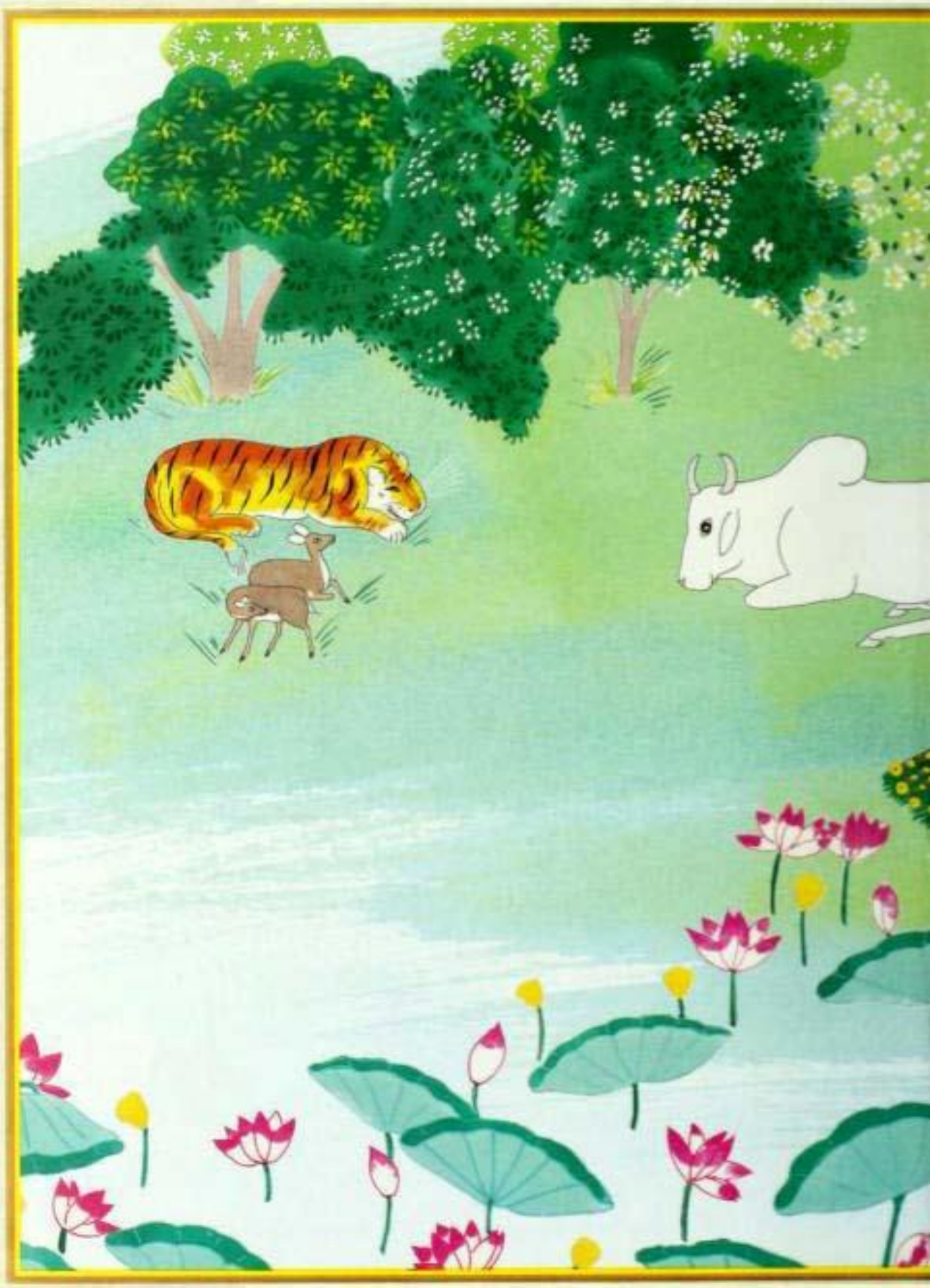

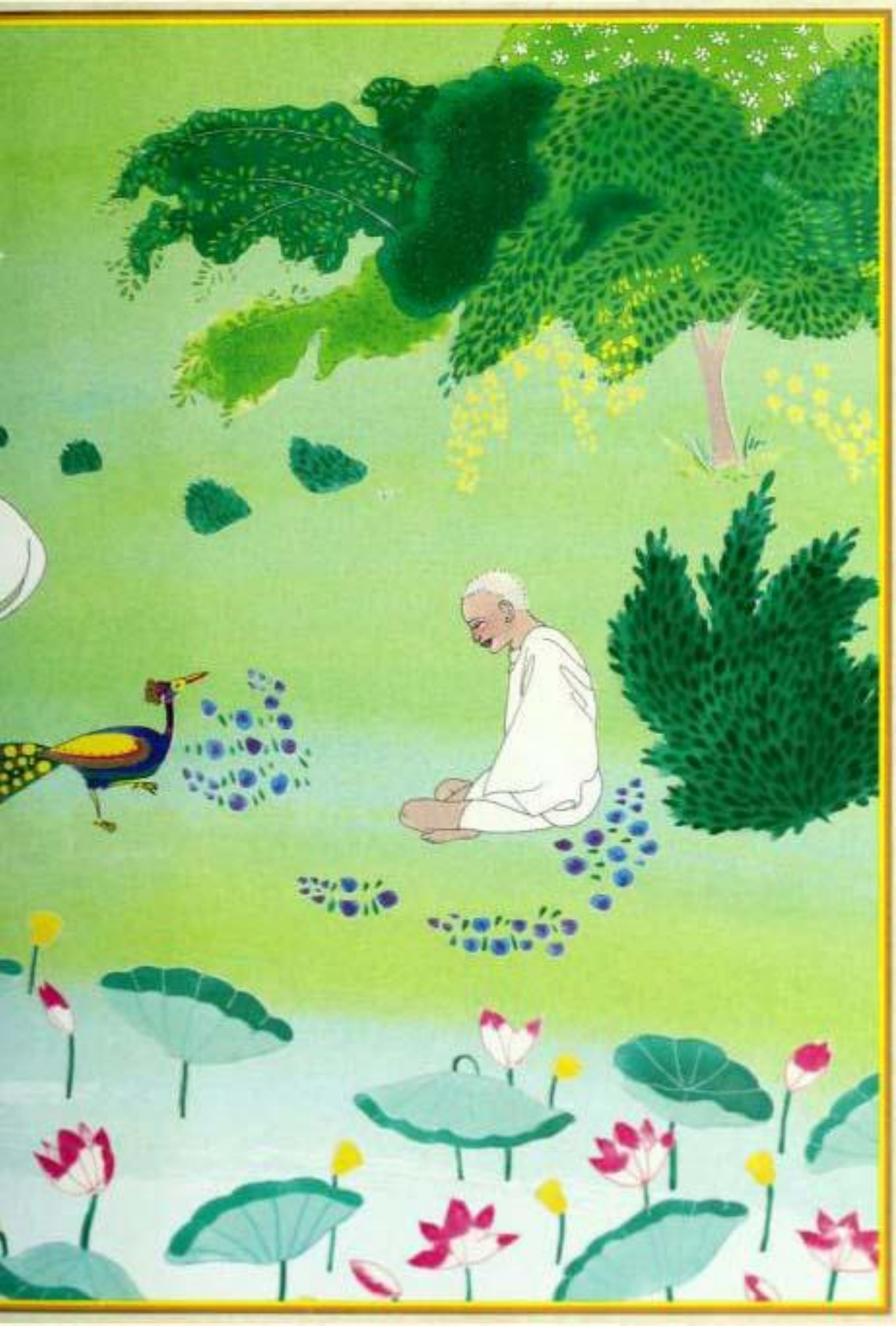

गाँधी के अनुयायियों ने जीवन की अच्छी और बुरी दोनों बातों को, स्वीकार किया. उन्होंने सभी चुनौतियों को विनम्रता और शांति से झेला और उन्होंने दुनिया में एकता और शांति लाने की कोशिश के.

1915 में गाँधी, अपनी पत्नी और चार बेटों के साथ, भारत वापिस लौटे. जैसे ही संभव हुआ उन्होंने भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष शुरू किया. वो भारत को पक्षपातपूर्ण और ऊंच-नीच की जाति व्यवस्था से भी मुक्त करना चाहते थे. इस जाति व्यवस्था में ब्राह्मण और पंडित सबसे ऊंची कोटि के माने जाते हैं. उनके नीचे क्षत्रिय आते हैं जो राजा और सैनिक बनते हैं. तीसरे स्तर पर वैश्य होते हैं जो व्यापार और नौकरी-चाकरी करते हैं. जाति व्यवस्था के सबसे निचले स्तर पर सबसे गरीब शूद्र होते हैं – जिन्हें अछूत समझा जाता है. गाँधी ने सबसे निचले तबके के लोगों को “हरिजन” यानि “भगवान के बच्चों” के नाम से संबोधित किया. गाँधी उनकी मुक्ति के लिए कटिबद्ध थे.

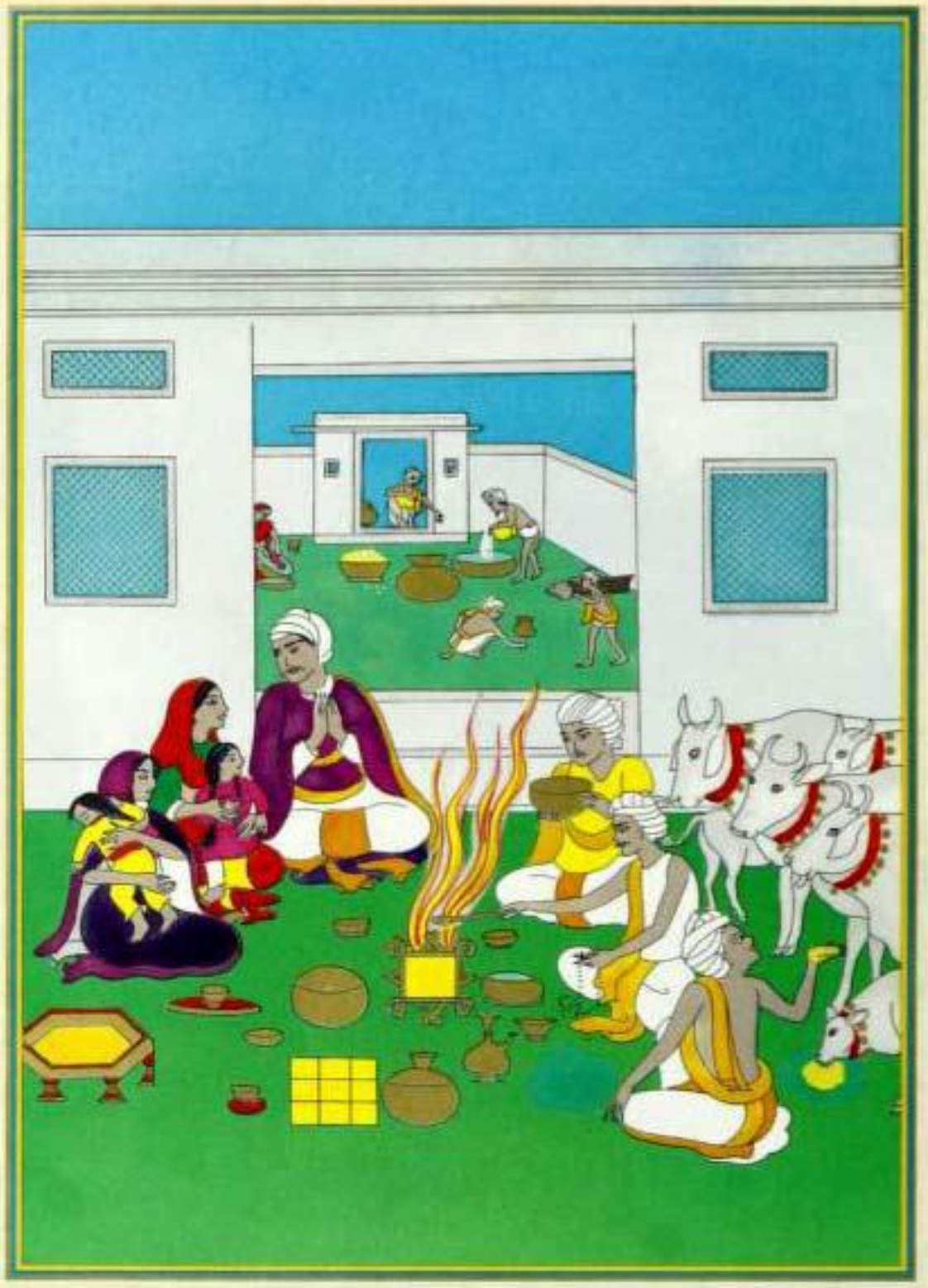

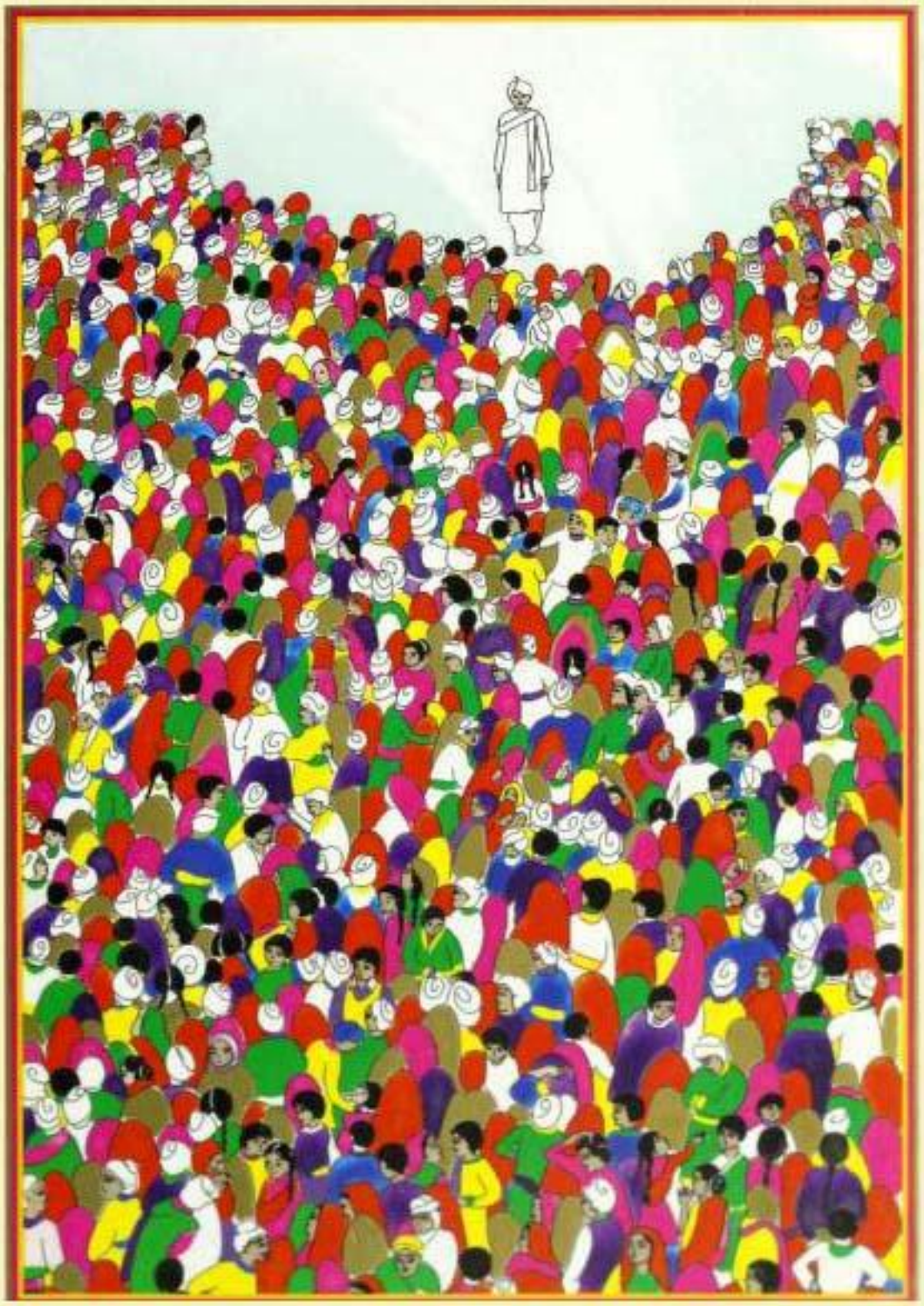

गाँधी ने भारत को, ब्रिटिश हुकूमत के उत्पीड़न से भी मुक्त कराने का बीड़ा उठाया. लगभग 300 वर्षों तक हजारों गोरे ब्रिटिश लोगों ने, 30 करोड़ भारतियों पर राज किया था. गाँधी ने लाखों-करोड़ों लोगों से सत्याग्रह का रास्ता अपनाने की अपील की. भारतीयों ने अंग्रेजी राज्य के खिलाफ असहयोग आन्दोलन शुरू किया. उसमें बहुत से भारतीय लोगों को जेलों में ठूंसा गया. लाखों लोगों ने खुद चरखे पर सूत बुनकर अपना कपड़ा बनाया. फिर उन्होंने इंग्लैंड की मिलों में बने कपड़े का बहिष्कार किया और खुद अपने हाथों से बुनी खादी पहनी. खादी, भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का एक सशक्त प्रतीक बनी.

भारत में असहयोग आन्दोलन से,
ब्रिटिश सरकार तिलमिला उठी.
फिर 1919 में, अमृतसर के पास
जलियांवाला में, ब्रिटिश हुकूमत की
फौज ने, 379 निहत्थे और बेक़सूर
गोलियों से भून डाला और हज़ार से भी
ज्यादा लोगों को ज़ख़्मी किया.

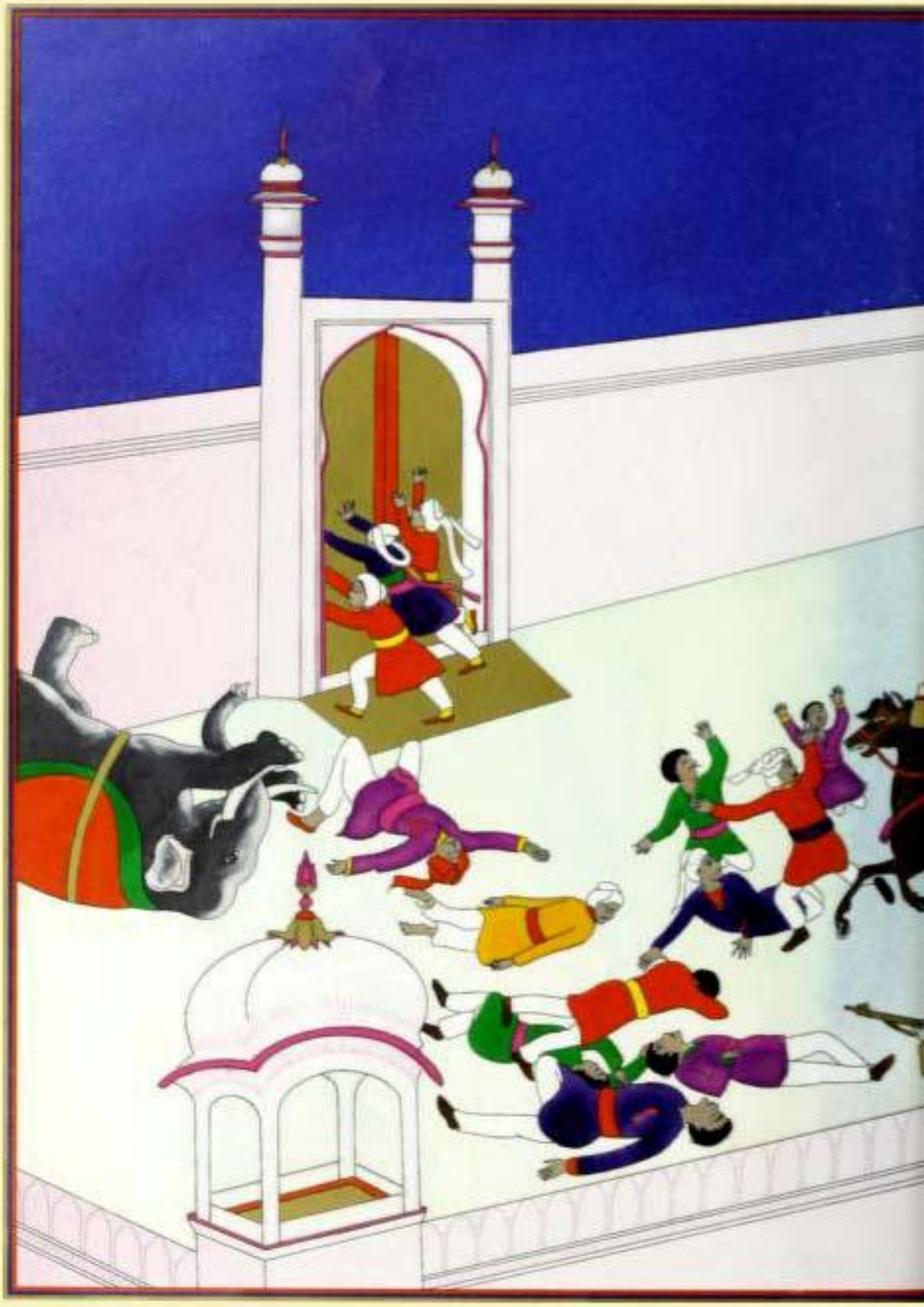

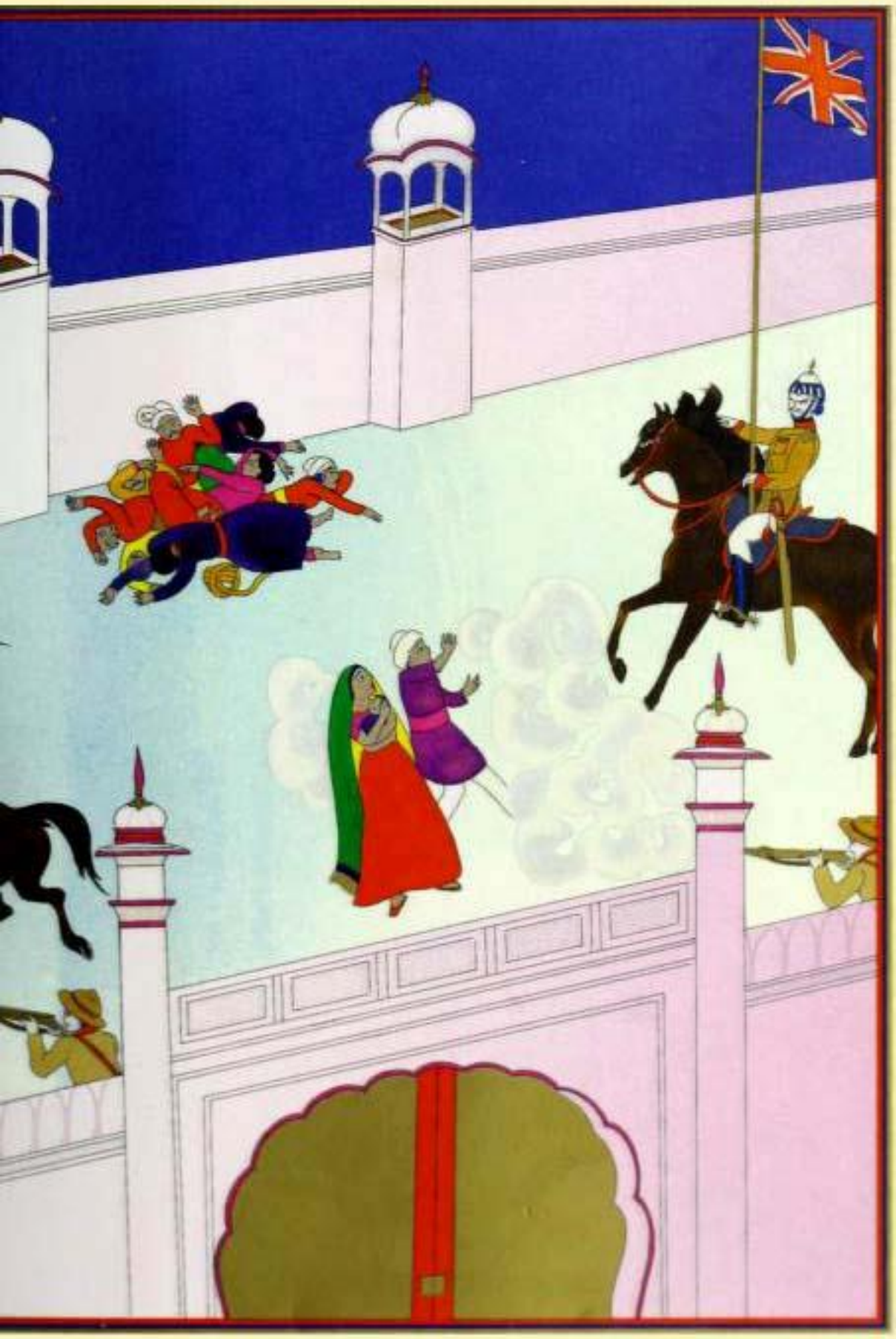

उसके बाद गाँधी ने एक देश व्यापी हड़ताल का नेतृत्व किया. गाँधी के अहिंसक सत्याग्रह आन्दोलन ने जोर पकड़ा. गाँधी के अपने शब्दों में : “अहिंसा लगातार काम करती है, एकदम चुपचाप शांति से. और उससे धीरे-धीरे करके एक बीमार समाज, एक स्वस्थ्य समाज में परिवर्तित हो जाता है.”

1922 में ब्रिटिश हुकूमत ने “अहिंसा” फ़ैलाने, ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने, और अंग्रेजों के खिलाफ प्रचार-प्रसार के लिए गाँधी को गिरफ्तार किया. गाँधी को दो साल के लिए जेल भेजा गया. पर उससे सत्याग्रह आन्दोलन पर कुछ खास असर नहीं पड़ा. वो ज़ारी रहा.

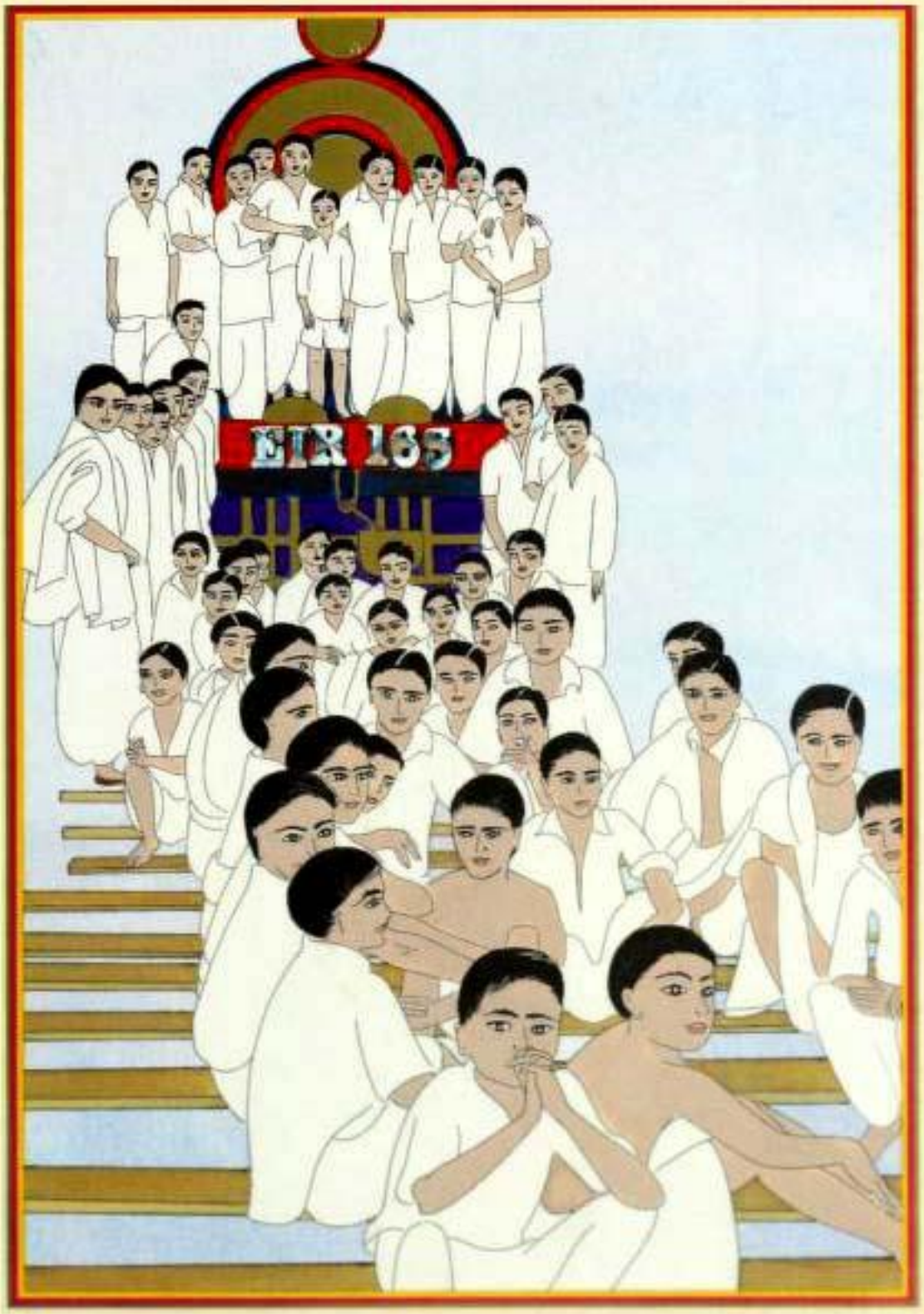

अब भारत में, ब्रिटिश साम्राज्यवाद को कड़ी चुनौती मिल रही थी. गाँधी उससे खुश थे. जेल जाने का गाँधी को गर्व था. जेल की कठिनाइयाँ उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी झेलीं. गाँधी मानते थे कि किसी उच्च आदर्श के लिए संघर्ष करना लोगों के लिए एक मार्गदर्शक बनेगा और उससे एक दिन भारत का हर नागरिक स्वतंत्र होगा.

भारत जैसे गर्म देश में नमक, लोगों के भोजन का, एक अभिन्न हिस्सा था. ब्रिटिश राज ने एक कानून पारित किया जिस द्वारा उन्होंने भारतीय लोगों पर अपने ही देश में, नमक बनाने पर प्रतिबन्ध लगाया. फिर ब्रिटिश नमक खरीदने के आलावा, भारत में लोगों के पास और कोई चारा ही नहीं बचा.

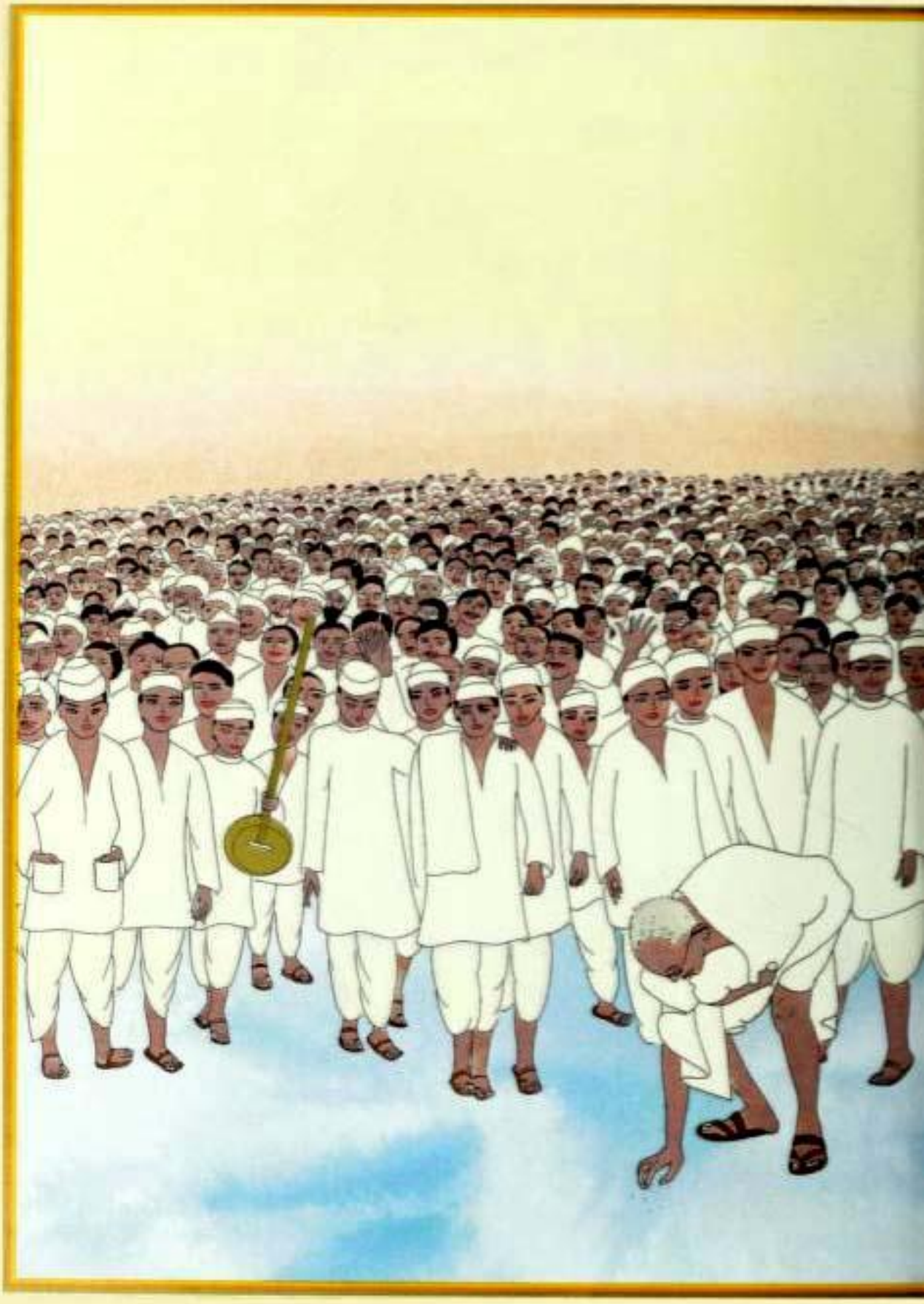

1930 में गाँधी ने “नमक यात्रा” शुरू की. 78 अन्य लोग गाँधी के साथ साबरमती से दांडी तक की इस यात्रा में शामिल हुए. दांडी, समुद्र तट पर बसा था और साबरमती से 200-मील दूर था. पर गाँधी के दांडी पहुंचने तक, हजारों लोग उस यात्रा में शामिल हुए. उस यात्रा का उद्देश्य ब्रिटिश नमक कानून का सांकेतिक उल्लंघन करना था. नमक यात्रा के बाद ब्रिटिश हुकूमत को यह स्वीकार करना पड़ा कि अब भारत में उनकी सत्ता कमज़ोर पड़ रही थी.

नमक यात्रा के नेतृत्व के बाद गाँधी को भी लगा जैसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद का शिकंजा भारतीय लोगों पर कुछ ढीला पड़ा हो. उसके बाद लोगों में एक ख़ुशी की लहर दौड़ी. गाँधी के अनुयायियों ने उने “महात्मा” (महान-आत्मा) का ख़िताब दिया.

ब्रिटिश सत्ता ने भारत पर अपनी जकड़ आसानी से नहीं छोड़ी. नमक यात्रा के बाद अंग्रेजों ने गाँधी को गिरफ्तार कर, जेल में डाला. ब्रिटिश सत्ता पर दबाव डालने के लिए गाँधी ने जेल में अनशन किया. ब्रिटिश सरकार को धमकी देने का यह बहुत शक्तिशाली और अहिंसक तरीका था. ब्रिटिश सरकार गाँधी की मृत्यु की ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहती थी. इसलिए छह दिनों के बाद ही ब्रिटिश सत्ता ने "अछूतों" के नागरिक अधिकारों की सुरक्षा-संधि पर हस्ताक्षर किये. शांति बनाये रखकर अहिंसक तरीकों से इस प्रकार का सामाजिक बदलाव लाना, गाँधी के लिए एक बड़ी विजय थी.

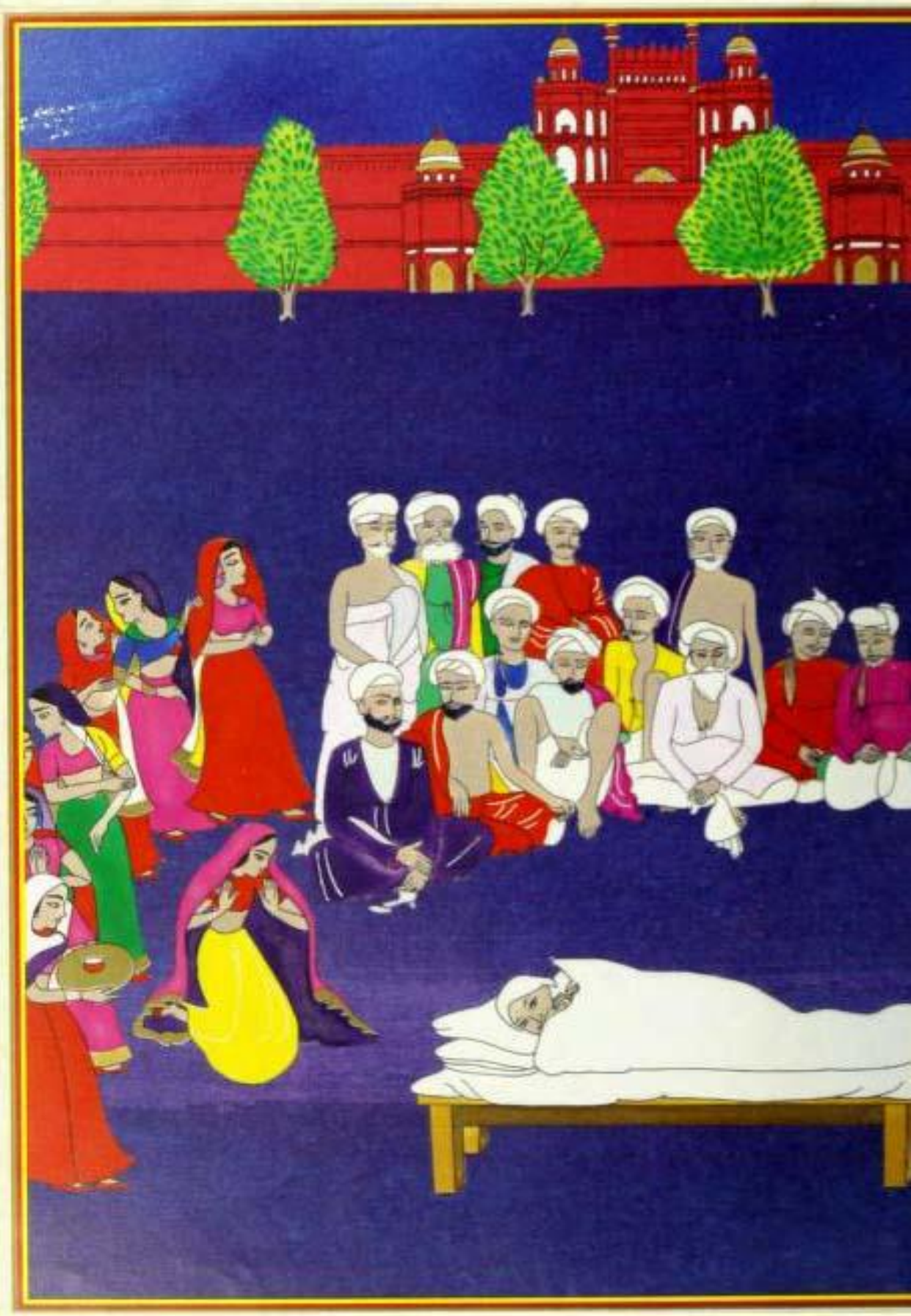

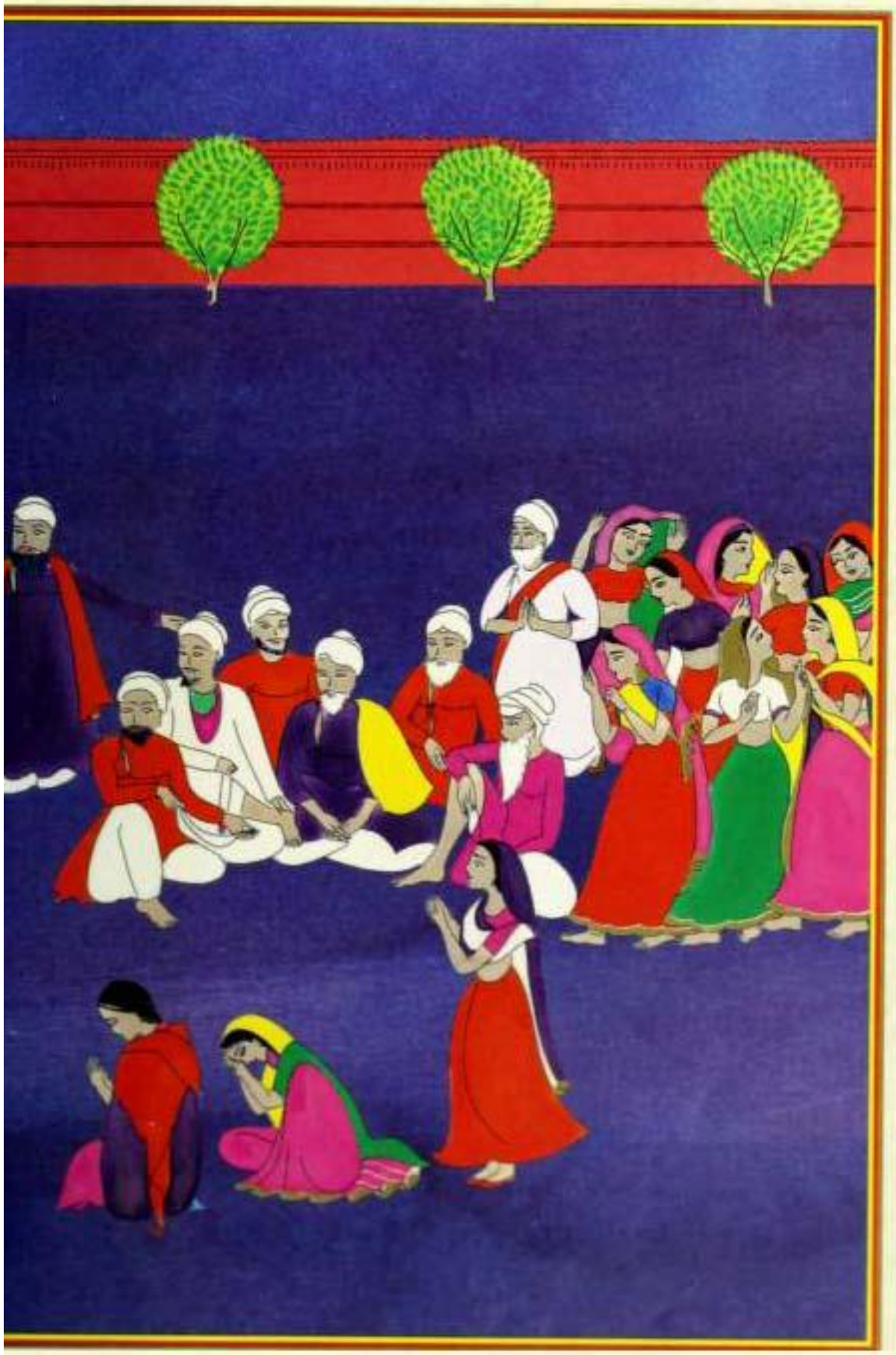

1944 में गाँधी की पत्नी कस्तूरबा का देहांत हुआ. कस्तूरबा जीवन भर अपने पति के साथ दृढ़ता से खड़ी रहीं और उन्होंने गाँधी को पूरा समर्थन दिया. कस्तूरबा, गाँधी के जीवन का अभिन्न हिस्सा थीं – वो उनकी प्रिय पत्नी थीं. गाँधी को, कस्तूरबा के देहांत से गहरा धक्का लगा.

दूसरे महायुद्ध के दौरान हिन्दू और मुस्लिम लोगों में धर्म और संस्कृति को लेकर गृहयुद्ध शुरू हो गया. देश भर में मारकाट और लूटपाट हुई. जब लोग धर्म के नाम पर एक-दूसरे को क़त्ल कर रहे थे तब उस समय गाँधी ने नंगे पैर चलकर दूर-दराज़ के गांवों में यात्रा की और अहिंसा के सन्देश का प्रचार किया.

1947 में भारत, ब्रिटिश सरकार की हुकूमत से आज़ाद हुआ. पर देश दो अलग-अलग देशों में बंट गया.
हिन्दू भारत के पहले प्रधान मंत्री बने जवाहरलाल नेहरु, और उत्तर में पाकिस्तान के पहले राष्ट्रपति बने मुहम्मद अली जिन्नाह.

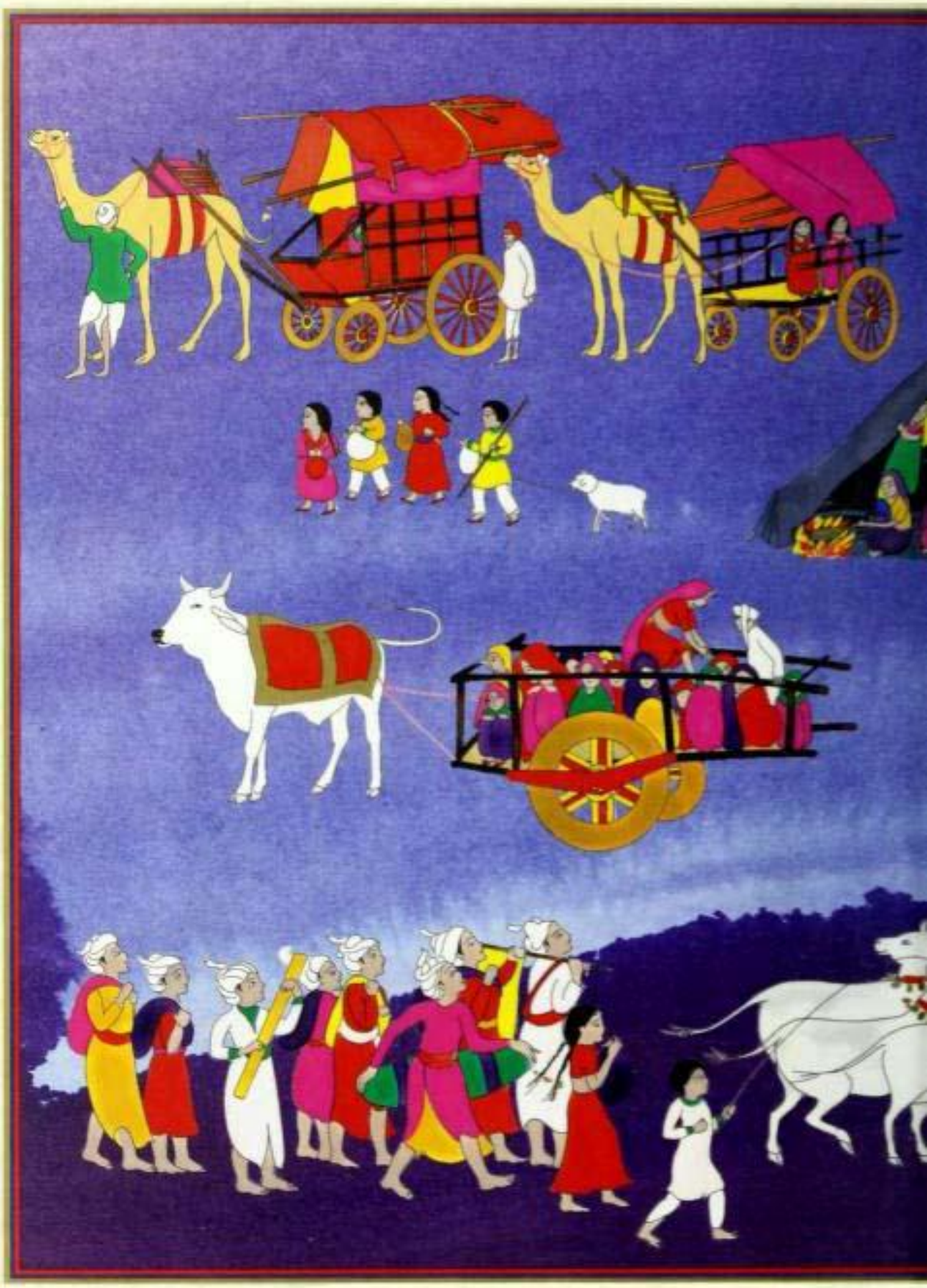

गाँधी ने भारत की स्वतंत्रता का जश्न नहीं मनाया. उस समय गाँधी ने उपवास रखा. वो चाहते थे कि हिन्दू और मुस्लिम एक दूसरे को माफ़ करें और एक-साथ प्यार-मोहब्बत से रहें. वो चाहते थे कि नफरत की आग को प्रेम से बुझाया जाए.

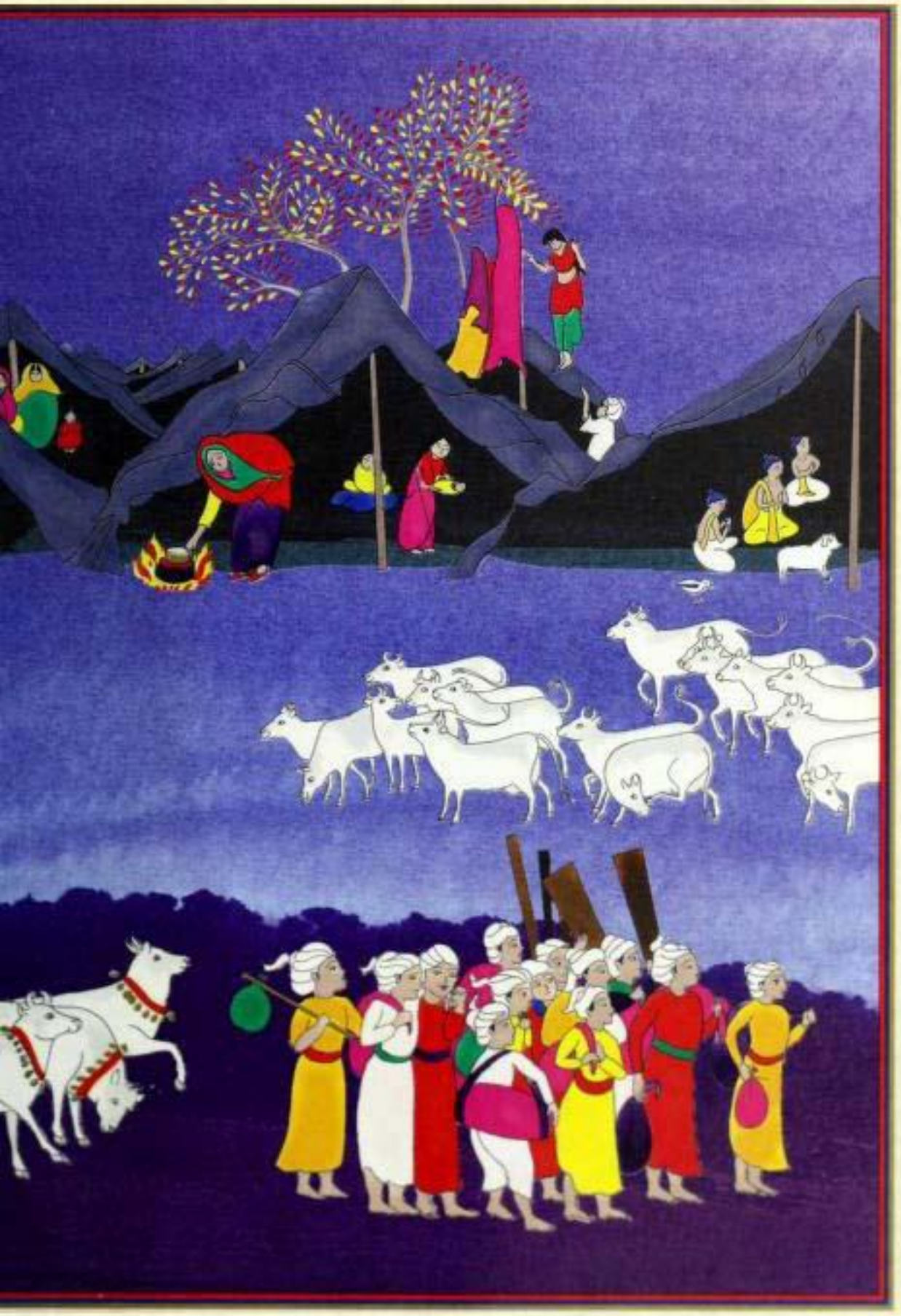

जिस प्रकार सत्याग्रह आन्दोलन ने अंग्रेजों को हराया था, गाँधी का विश्वास था कि उसी तरह सत्याग्रह, भारत के बंटे लोगों को भी एक सूत्र में बांधेगा. पर दुर्भाग्य से वो मेल-मिलाव और एकीकरण संभव नहीं हो पाया.

उपवास करते समय 78 वर्ष के गाँधी लगभग मरते-मरते बचे. वो बहुत कमज़ोर हो गए थे पर फिर भी उन्होंने लोगों से अपना संवाद ज़ारी रखा.

क्योंकि गाँधी ने सभी धर्मों को गले लगाया था इसलिए हिन्दू और मुस्लिम कट्टरपंथी जो अपने ही धर्म को श्रेष्ठ मानते थे, गाँधी से घृणा करते थे.

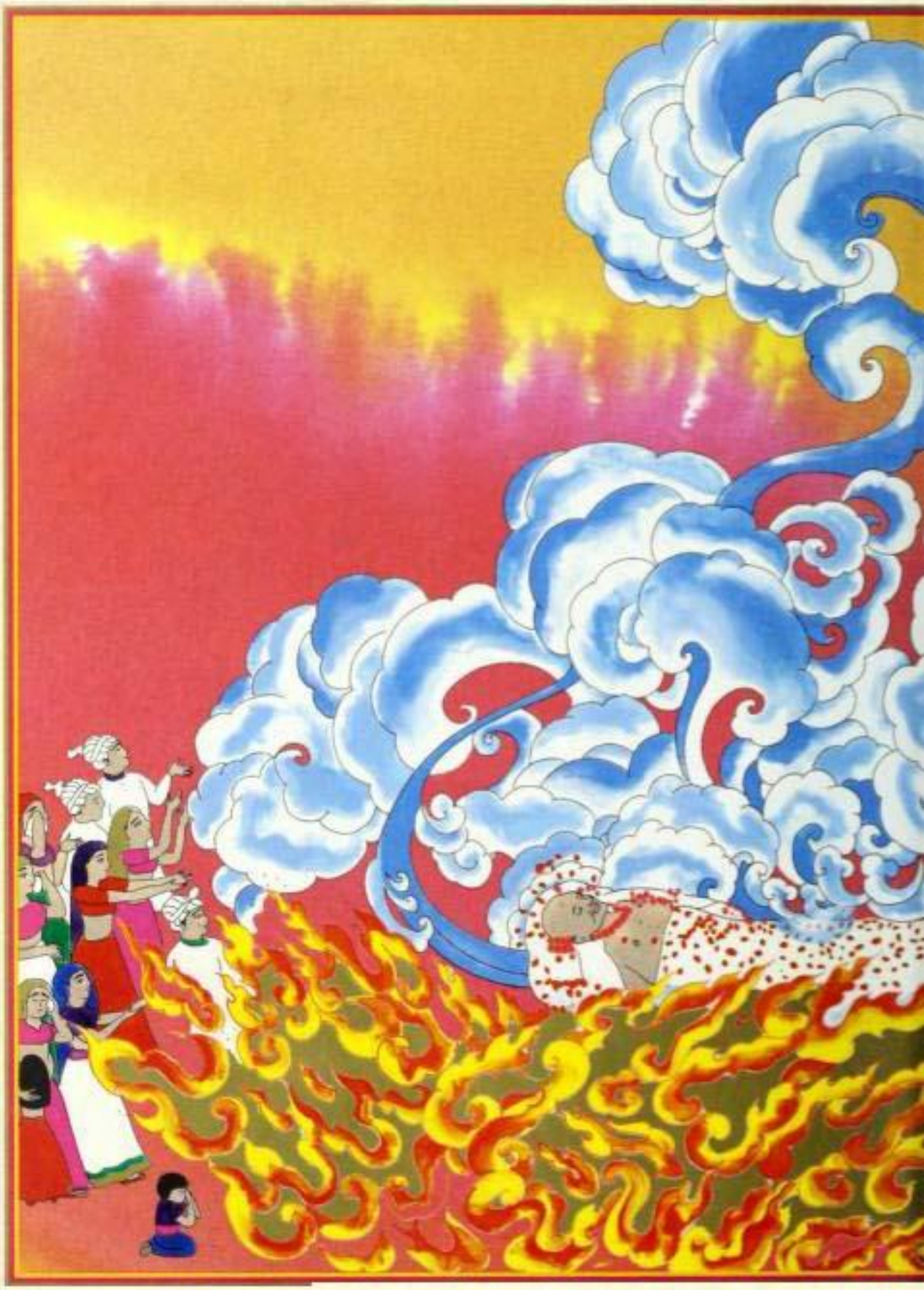

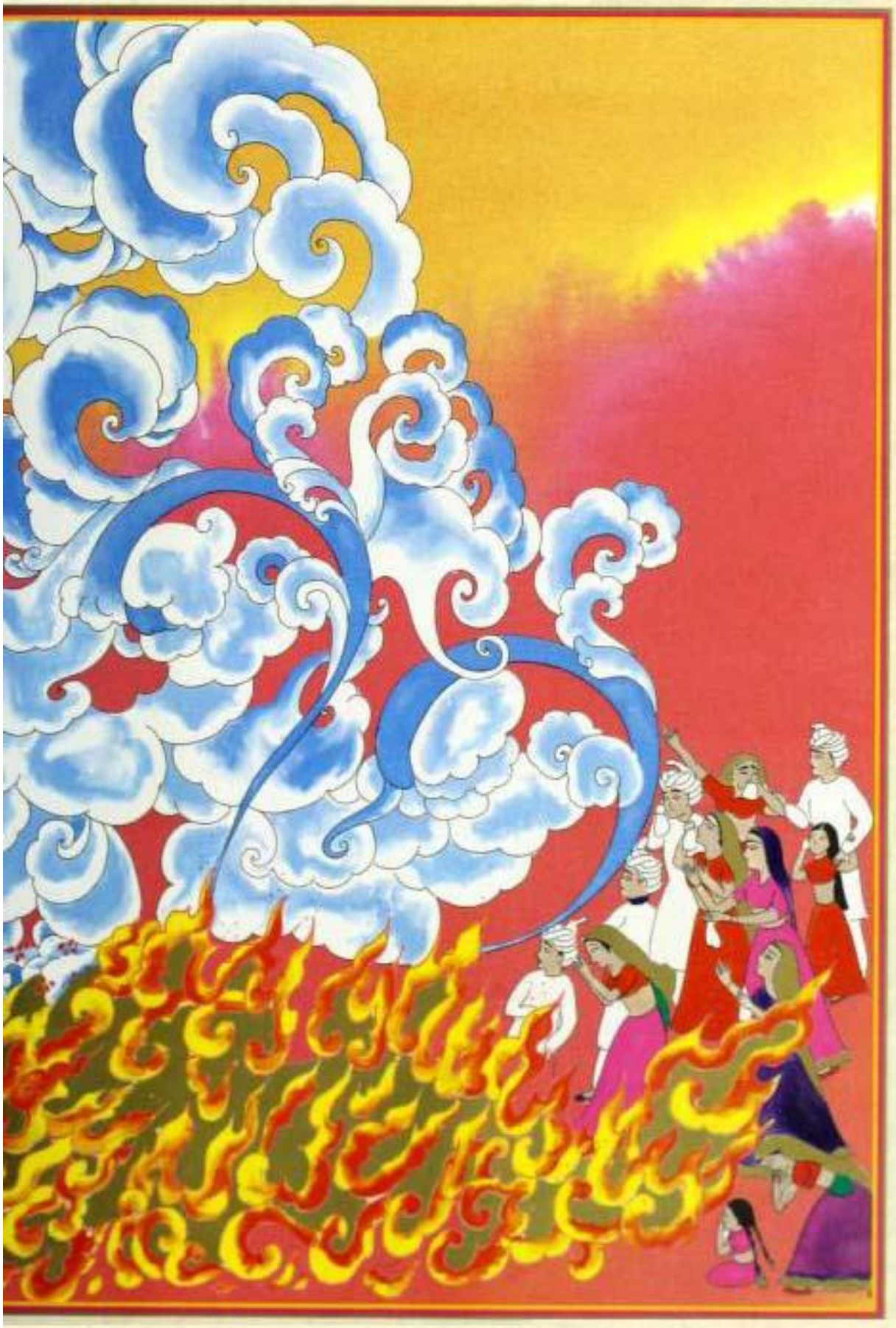

30 जनवरी 1948 को, गाँधी एक प्रार्थना सभा में गए जहाँ हजारों लोग उनका इंतज़ार कर रहे थे. वहां पर एक कट्टरपंथी हिन्दू – नाथूराम गोडसे ने उन पर बन्दूक से गोली चलाई. गोली सीधे गाँधी के हृदय में जाकर लगी. उनके मुंह से निकले आखरी शब्द थे “राम, राम राम” (मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ.”)

गाँधी की मृत्यु के बाद दिल्ली में उनका अंतिम संस्कार किया गया. भारत और दुनिया भर में लाखों-करोड़ों लोगों ने इस शांति के दूत के देहांत पर शोक मनाया.

मृत्यु के समय गाँधी के पास बहुत कम भौतिक चीज़ें थीं – दो चम्मच, दो बर्तन, तीन बन्दर, तीन किताबें, एक जेब घड़ी, एक चश्मा, एक टीन का प्याला (जो उन्हें जेल में मिला था), एक मेज़, दो जोड़ी सैंडिल और खादी के कपड़े.

गाँधी की अस्थियों को गुलाब की पंखुड़ियों के साथ मिलाकर भारत की तीन पवित्र नदियों – गंगा, जमुना और सरस्वती के संगम में विसर्जित कर दिया गया.

गाँधी की प्रिय पुस्तक गीता में लिखा था "प्रेम के भगवान के साथ आत्मा का मिलन ही सर्वोच्च स्थिति है. तब व्यक्ति मृत्यु के बाद अमर हो जाता है." मानवता के लिए असीम प्रेम ही गाँधी का जीवन भर मार्गदर्शक रहा. गाँधी ने करोड़ों लोगों की ज़िन्दगी को बदला और बाद में वे खुद अमर हो गए.

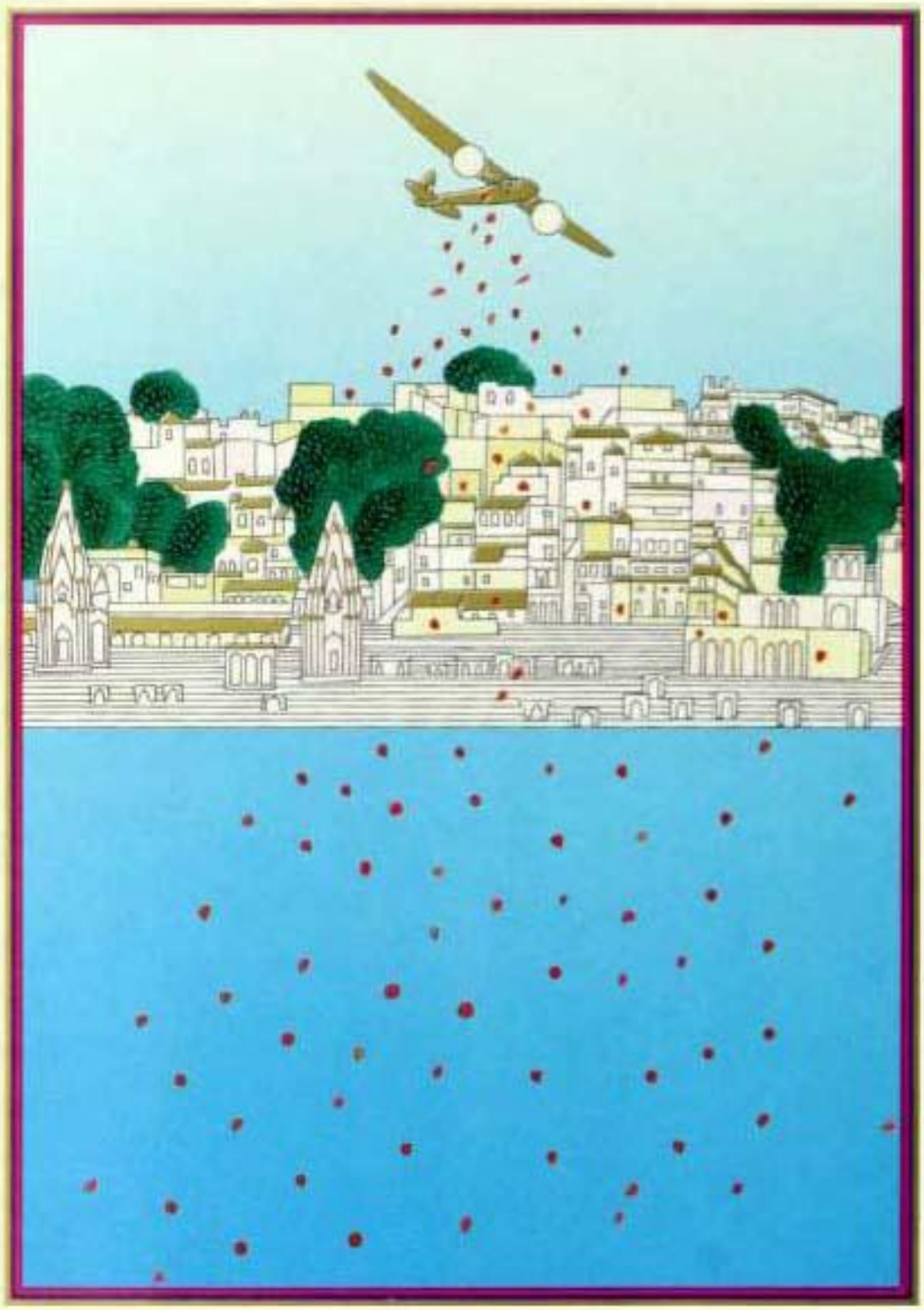

लेखक का नोट

अपने जीवन में लगातार बदलाव लाने के कारण गाँधी, पृथ्वी पर जीने वाले शायद सबसे विलक्षण व्यक्ति थे. एक डरे, शर्मीले बच्चे से वो एक महान, अच्छे और उदार व्यक्ति बने. अपनी ज़िन्दगी में वो खुद के साथ सच्चाई से पेश आए और उन्होंने दूसरों की नक़ल नहीं की. खुद के साथ सच्चाई बरतना कोई आसान काम नहीं होता है. गाँधी उन बिरले लोगों में से थे जिन्होंने अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जिया. उसमें वो बहुत सफल भी रहे. उनका जीवन आध्यात्मिक जागरूकता, प्रेम और शांति से भरा था.

गाँधी एक भारतीय देश भक्त और महान आध्यात्मिक नेता थे. इसीलिए उन्हें "राष्ट्र-पिता" कहकर संबोधित किया जाता है. आध्यात्मिक भावनाएं उन्हें अपने जैन धर्म से मिलीं. जैन धर्म के अनुसार मनुष्य की आत्मा - प्रार्थना, नियम, इमानदारी और अहिंसा का अभ्यास करके ही शुद्ध होती है. जैन धर्म का प्रतीक "झाड़ू" है जिससे ज़मीन से चींटियों और कीड़े-मकोड़ों को हटाया जाता है, जिससे चलते समय वे पैरों से कुचले नहीं जाएँ.

गाँधी की सबसे प्रिय पुस्तक थी भागवद गीता – भारत की पवित्र पुस्तक जिसमें भगवान कृष्ण ने समता, खुद में बदलाव और भौतिक चीज़ों से निर्लिप्तता का सन्देश दिया था. अंग्रेजी में गाँधी की प्रिय पुस्तकें थीं लियो टॉलस्टॉय की किताब *द किंगडम ऑफ़ गोड इस विदीन यू,* हेनरी डेविड थोरू की पुस्तक *ओन द ड्यूटी ऑफ़ सिविल डिसओबीडीयेंस* और जॉन रस्किन की पुस्तक *अन्टू द लास्ट.* तीन किताबें जिन्हें गाँधी ने जीवन भर अपने साथ रखीं थीं – भागवद गीता, कुरान और बाइबिल.

गाँधी, अहिंसक आन्दोलन और नागरिक बहिष्कार की रणनीतियों के लिए प्रसिद्ध हैं. गाँधी ने अपनी आत्मकथा *द स्टोरी ऑफ़ माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ* में लिखा "आज्ञा-उल्लंघन, प्रभावी होने के लिए सच्चा होना चाहिए, उसे दूसरों का आदर करना चाहिए, उसे विद्रोही नहीं होना चाहिए ... उसमें किसी के लिए बैर और नफरत भी नहीं होनी चाहिए." गाँधी किसी भी प्रकार की लड़ाई और युद्ध के खिलाफ थे. "अगर तुम वाकई में साहसी लोगों को देखना चाहते हो, तो उनकी तरफ देखो जो क्षमा करते हैं. अगर तुम असली हीरो देखना चाहते हो तो उन्हें देखो जो नफरत करने वालों को प्रेम देते हैं."

दुनिया के सभी बड़े नेता गाँधी का बहुत आदर और सम्मान करते थे. गाँधी के क़त्ल में बाद दुनिया एक सबसे मशहूर वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने उनके बारे में कहा, "आने वाली पीढ़ियाँ शायद कभी यकीन नहीं करेंगी कि हाड़-मांस का बना ऐसा बंदा कभी पैदा हुआ था और पृथ्वी पर चला था."

मेरी यह दिली तमन्ना है कि मैं खुद, गाँधी के सम्मान में एक सच्चाई, शांति और प्रेम की ज़िन्दगी जी सकूँ.

डम्मी